हिंदी गृह पत्रिका | सितंबर 2026

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड

सागर रत्न



20वाँ अंक

सागर से संवाद, हिंदी से विकास

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड को
एआईएमए नेतृत्व उत्कृष्टता पुरस्कार में
“वर्ष का उत्कृष्ट सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम”
पुरस्कार से सम्मानित किया गया।





सागर रत्न

हिंदी गृह पत्रिका

सितंबर 2026 | 20 वाँ अंक

अनुक्रमणिका

1.	अध्यक्षीय संदेश	2
2.	संपादकीय विचार	3
3.	पुरस्कार एवं मान्यताएँ	4
4.	यात्रावृत्तांत	6
5.	राजभाषा मार्गदर्शिका	11
6.	राजभाषा समाचार	12
7.	कंपनी समाचार	20
8.	नौवहन शब्दावली	26
9.	व्यंजन	27
10.	बोलचाल की हिंदी	28
11.	कविता	31
12.	लेख	34
13.	कहानी	36

संपादक मंडल

संरक्षक

श्री जोस वी जे

निदेशक (वित्त) एवं अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

(अतिरिक्त प्रभार)

संपादक

श्री सुबाष ए के

महाप्रबंधक

(मानव संसाधन एवं अध्ययन विकास)

संपादक सदस्य

श्रीमती सरिता जी
प्रबंधक (राजभाषा)

श्रीमती लिजा जी एस
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

श्रीमती आतिरा आर एस
हिंदी टंकक



अध्यक्षीय अभिव्यक्ति

प्रिय सहकर्मियों,

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड की हिंदी गृह पत्रिका 'सागर रत्न' के 20वें अंक का प्रकाशन मेरे लिए अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है। इस अवसर पर मैं पत्रिका के संपादन एवं प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में इस वर्ष हमारी संस्था ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। भारत सरकार के पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय से 'राजभाषा शील्ड', कोच्चि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन पुरस्कार तथा हमारी गृह पत्रिका 'सागर रत्न' को भी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए मैं राजभाषा विभाग की पूरी टीम को विशेष रूप से बधाई देता हूँ। साथ ही, उन सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने अपने दैनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देकर, हिंदी प्रशिक्षण एवं विभिन्न राजभाषा गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी करके तथा पत्रिका एवं अन्य हिंदी संबंधी कार्यों में अपना बहुमूल्य योगदान देकर इस उपलब्धि को संभव बनाया है।

'सागर रत्न' केवल एक गृह पत्रिका नहीं, बल्कि हमारी संस्था की उपलब्धियों, रचनात्मकता, अनुभवों और हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का दर्पण है। इसके प्रत्येक अंक में हमारे कर्मचारियों की प्रतिभा और सृजनात्मकता को अभिव्यक्ति मिलती है। मुझे विश्वास है कि इसका 20वाँ अंक भी पाठकों को नई जानकारी, प्रेरणा और आनंद प्रदान करेगा।

आज के बदलते तकनीकी और व्यावसायिक परिवेश में हिंदी का प्रयोग बढ़ाना हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। राजभाषा हिंदी को केवल कार्यालयीन दायित्व के रूप में नहीं, बल्कि कार्यकुशलता, संवाद और सहभागिता के प्रभावी माध्यम के रूप में अपनाना आवश्यक है। हमें अपने दैनिक कार्यों में अधिकाधिक हिंदी का प्रयोग करने और सहकर्मियों को भी इसके लिए प्रेरित करने का प्रयास करना चाहिए।

मैं एक बार पुनः कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड की हिंदी टीम तथा हिंदी के प्रचार-प्रसार में योगदान देने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ। आशा है कि हम सभी इसी उत्साह और समर्पण के साथ आगे भी राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन में नए मानदंड स्थापित करेंगे।

'सागर रत्न' के 20वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

जोस वी के

जोस वी जे

निदेशक (वित्त) व अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (अतिरिक्त प्रभार)



संपादकीय विचार

प्रिय पाठकों ,

हर्ष एवं गर्व के साथ 'सागर रत्न' हिंदी गृह पत्रिका के 20वें अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार प्रसन्नता हो रही है। यह अंक केवल प्रकाशन-यात्रा का एक और पड़ाव नहीं, बल्कि हिंदी के प्रति हमारी निरंतर प्रतिबद्धता, रचनात्मकता और सामूहिक प्रयासों की सुदीर्घ यात्रा का एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है ।

'सागर रत्न' हमारे कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा, विचारों और अनुभवों को अभिव्यक्ति प्रदान करने वाला एक सशक्त मंच है। इस अंक को भी आपकी रचनाओं, संस्मरणों, विचारों और सक्रिय सहभागिता से समृद्ध करने का प्रयास किया गया है। प्रत्येक रचना में नवीन दृष्टिकोण, सार्थक अनुभव, सजीव कल्पनाशीलता तथा विचारोत्तेजक अंतर्दृष्टियाँ समाहित हैं, जो ''सागर रत्न'' की विषयवस्तु को समृद्ध बनाते हुए उसकी विशिष्ट पहचान और गरिमा को और सुदृढ़ करती हैं।

बीसवें अंक तक की यह यात्रा हम सभी के सामूहिक सहयोग, स्नेह और सतत सहभागिता का परिणाम है। इस यात्रा में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों, सहयोगियों एवं हिंदी-प्रेमियों के प्रति मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। आपका उत्साह ही 'सागर रत्न' की निरंतर प्रगति और सार्थकता का आधार है।

हमें विश्वास है कि 'सागर रत्न' आने वाले वर्षों में भी ज्ञान, विचार, सृजन और संवाद का सशक्त सेतु बनकर हमारे कार्यस्थल में हिंदी के प्रयोग को और अधिक सहज, प्रभावी एवं व्यापक बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा।

आइए, हम सभी मिलकर हिंदी को केवल राजभाषा के रूप में नहीं, बल्कि अपने कार्य-व्यवहार, संवाद और रचनात्मक अभिव्यक्ति का सहज माध्यम बनाएँ। हम आपको अपनी प्रतिभा, विचारों एवं रचनात्मक अभिव्यक्तियों को निरंतर साझा करने तथा ''सागर रत्न'' के भविष्य को आकार देने और इसे नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

शुभकामनाओं सहित।

सुबाष ए के

सुबाष ए के

महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं अध्ययन विकास)

पुरस्कार एवं मान्यताएं

पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय से राजभाषा पुरस्कार



कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड को 'ग' क्षेत्र में राजभाषा हिंदी के सर्वोत्तम कार्यान्वयन हेतु पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय द्वारा राजभाषा शील्ड (द्वितीय पुरस्कार) से सम्मानित किया गया । पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्रालय के दिनांक 29 जुलाई 2026 को पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग कार्यालय, नई दिल्ली में आयोजित पुनर्गठित हिंदी सलाहकार समिति की पहली बैठक में माननीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग एवं आयुष मंत्री श्री सर्बानंद सोणोवाल के करकमलों से श्री एल्दो जॉण, कार्यकारी निदेशक (तकनीकी), सीएसएल ने पुरस्कार स्वीकार किया ।



अपने काम को पूरी निष्ठा
और समर्पण के साथ कीजिए;
सफलता स्वयं आपके कदम चूमेगी।
–डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम

सीएसआर पुरस्कार

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड को केरल मैनेजमेंट एसोसिएशन द्वारा वर्ष 2025-26 के लिए सर्वश्रेष्ठ निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) कार्य निष्पादन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।





कैज़न पुरस्कार

सीएसएल ने 15 और 16 जुलाई 2026 को कोच्ची में केरल राज्य उत्पादकता परिषद द्वारा आयोजित कैज़न प्रतियोगिता कार्यक्रम 2026 में प्लेटिनम श्रेणी पुरस्कार जीता है। टीम की उपलब्धि निरंतर सुधार, नवाचार और प्रचालन उत्कृष्टता के प्रति सीएसएल की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

तैराकी में जोहान जूलियन की स्वर्णिम छलाँग

42वीं केरल राज्य एक्वेटिक चैंपियनशिप में ग्रूप–2 वर्ग में जोहान जूलियन पी. जे. जो श्री जूलियन जोस, सहायक प्रबंधक, सीएसएल के सुपुत्र हैं, उन्होंने शानदार प्रदर्शन करते हुए केरल राज्य एक्वेटिक चैंपियन का खिताब हासिल किया। उन्होंने 50 मीटर, 100 मीटर, 200 मीटर और 400 मीटर फ्रीस्टाइल तथा 50 मीटर बटरफ्लाई में पाँच व्यक्तिगत स्वर्ण पदक जीते। इसके अलावा, उन्होंने 4100 मीटर फ्रीस्टाइल रिले में स्वर्ण तथा 4100 मीटर मेडल रिले में रजत पदक हासिल किया। उनकी इस शानदार उपलब्धि ने केरल के तैराकी जगत में एक नई मिसाल कायम की।



यात्रावृत्तांत



डॉ सीमा सूरी
गैर-सरकारी स्वतंत्र निदेशक

मेरी काशी यात्रा....

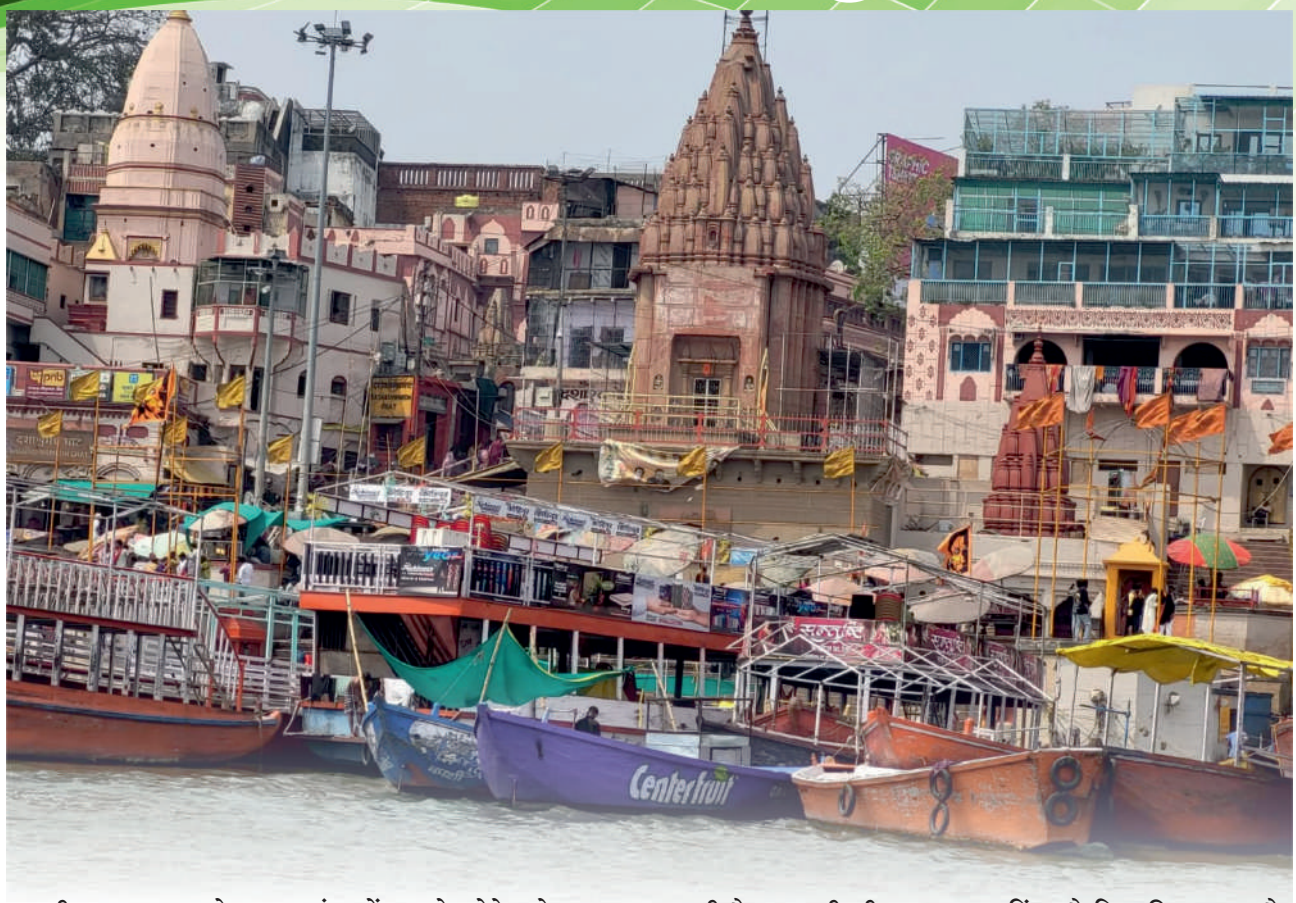


मैंने अपने अब तक के जीवन मे अनेक यात्राएं की हैं जिनमें पर्यटन स्थलों से अधिक तीर्थाटन हैं। शिव और उनसे जुड़े रहस्य, ज्योतिर्लिंग एवं तीर्थ सदैव मुझे अपनी ओर खींचते रहे हैं । अब तक जितने ज्योतिर्लिंग की यात्राएं की हैं उन सबका अपना अलग अनुभव है किन्तु काशी एक ऐसा स्थान है जहाँ बार बार जाने का मन करता है । काशी जिसे बनारस कहा जाता है उसे आप जितनी बार भी देखें हर बार आपको अलग दिखाई देगी । मोक्ष नगरी जिसमें पैदा होने या मृत्यु प्राप्त होने पर सीधे मोक्ष की प्राप्ति होती है इसलिए न जाने कितने विदेशी और भारतीय सैलानी अपना अंतिम जीवन चक्र यही बिताने के लिए रह जाते है मात्र मोक्ष की आस लिए । बनारस की हर गली की अपनी एक खुशबू है, अपना एक स्वाद है । छोटे छोटे ठेलों पर लगी





लम्बी कतारें सुबह सुबह बनारस की गलियों मे स्वाद के वो जायके अपने आप मे इस जगह को खास बनाते है । ये तो पर्यटन का पहलू है किन्तु जो इसकी अपनी आत्मा है जो इसका अपना अंदाज़ है वो है शिव का साक्षात्कार जो यदि आप में शिव के प्रति रत्ती भर भी आस्था है तो आपको वहाँ जाकर अवश्य अनुभव होगा ऐसा मेरा दावा है । बाबा विश्वनाथ के अद्भुत दर्शन, काल भैरव जिन्हें काशी का कोतवाल कहा जाता है उनके भव्य रूप और उस जगह में एक अद्भुत शक्ति जो आपको अपनी ओर खींचती है । सुबह सुबह और ढलते सूर्य के साथ सभी घाटों पर होने वाली भव्य आरती । डमरू ढ़ोल और मंजीरों से गूँजता



अस्सी घाट । शाम के समय गंगा में चलते छोटे बड़े भव्य क्रूज़ और गंगा की अविरल धारा में स्नान कर सारी थकन उतर जाने का वो असीम सुख मुझे अब भी स्मरण है । जीवन और मृत्यु के निरंतर साथ चलने बल्कि जहाँ मृत्यु एक नए सफ़र का आरम्भ अनुभव हो ऐसे मनिकर्निका और राजा हरीशचंद्र घाट । इन घाटों पर एक भी पहर ऐसा नहीं ज़ब एक भी चिता न जल रही हो । इसे लेकर अनेक दंत कथाएं और इतिहास की कहानियां प्रसिद्ध हैं । चौबीस घाट और हर घाट का अपना इतिहास । पौराणिक एवं नवीन शिल्प का संगम । युवाओं का शिव के प्रति अगाध विश्वास और भक्ति एवं श्रद्धा का अनोखा संगम ये सब एक ही स्थान पर आपको एक साथ मिलते है । जो लोग सेहत ठीक न होने के कारण केदारनाथ नहीं जा सकते उन्हें काशी के केदार घाट पर बने शिव मंदिर में पूजा करनी चाहिए और ऐसी मान्यता है की इस मंदिर में जलाभिषेक करने से आपको केदारनाथ बाबा के दर्शन का ही फल प्राप्त होता है। बनारस एक और बात के लिए प्रसिद्ध है वो है वहाँ की गंगा जमना तहजीब जिन दिनों मैं वहाँ थी रोजे चल रहे थे और हमने देखा दिनभर वो लोग अपने काम काज करते हिन्दू भाइयों को दर्शन करवाते, रिक्शा वाले सवारियां लाते जाते और रात को उनका बाज़ार ऐसा सजता ज़ब वो रोजे खोलते। बनारस की पहचान बनारसी साड़ियाँ जिनके कारीगर आज भी पुरानी टेकनीक से ओरिजनल बनारसी सिल्क तैयार करते है। बहुत जगह अब इसकी कॉपी भी बन रही है पर अभी भी पुराना हुनर जिंदा है जिनकी सुरक्षा और उसे बढ़ावा मोदी सरकार दे रही है । क्रूज़ पर सवारी आरती के लिए नमो घाट से जलसा क्रूज आप ऑन लाइन बुक कर सकते है और सभी घाटों के आगे से निकलते हुए इतिहास जान सकते है । संकट मोचन मंदिर जाकर बजरंगबली का आशीर्वाद जरूर प्राप्त करें यहाँ हर साल संगीत महोत्सव भी होता है जहाँ बड़े बड़े कलाकार संगीतकार अपनी प्रस्तुति देते है । मोदी के पहले की काशी और बाद की काशी दोनों देखी मैंने और इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है वहाँ का बदला हुआ निज़ाम। सुगम दर्शन की टिकट 300 की है। आप वो ले सकते है। आप नॉर्मल लाइन में भी दर्शन कर सकते है बस बहुत भीड़ वाले दिनों मे न जाए । मेरा मानना है जिसे बाबा विश्वनाथ ने बुलाया अपनी नगरी में वो वाकई भाग्यशाली है। मुझे अभी तीन ज्योतिर्लिंग पूरे करने है और काशी में मैं दो बार जा चुकी, पर फिर भी ज़ब भी अवसर लगेगा मैं पुनः जाउंगी क्योंकि बनारस एक दो चार बार से देख लेने वाला शहर हैं ही नहीं, हर बार अलग अनुभूति अलग एहसास अलग भाव अलग विचार अलग घटनाओं का एक क्रम है जिसे जितना देखो उत्सुकता उतनी ही ओर बढ़ती है। तो आपको भी ज़ब अवसर मिले काशी की यात्रा करें और अपने अनुभव जमा करें ।

ॐ नमः पार्वती पत्याय : हर हर हर महादेव.....

यात्रावृत्तांत



हरिकृष्णन आर
वरिष्ठ इंस्ट्रुमेंट मेकानिक



सपनों के पंखों पर..... जापान की ओर!

दिनांक 3 जनवरी को सुबह 11 बजे मुझे एक ई-मेल मिला। जापान में दिनांक 4 से 16 फरवरी तक आयोजित होने वाले एओटीएस प्रशिक्षण के लिए चयनित 20 प्रतिभागियों की सूची में मेरा नाम भी था। सात महिलाओं सहित इस सूची में अपना नाम देखकर मेरी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मैंने तुरंत परिवार और दोस्तों को यह खुशखबरी सुनाई और मन ही मन प्रार्थना की-''ईश्वर! अब कोई बाधा न आए और मुझे जापान जाने का यह सुनहरा अवसर अवश्य मिले।''

सभी ने मिलकर ''एओटीएस सातवां बैच'' नाम से एक व्हाट्सऐप ग्रूप बनाया। टीम कैप्टन श्री बिजु थॉमस, सहायक महाप्रबंधक (पोत मरम्मत प्रचालन सामग्री) के नेतृत्व में जापान यात्रा की तैयारियों को लेकर कई बैठकें हुईं। जापान का मौसम, आवश्यक सामान और यात्रा की तैयारियों पर चर्चा की गई। कोट, सूट, थर्मल सेट, ऊनी मोज़े और दस्ताने आदि खरीदकर हम तैयार हो गए। जनवरी के अंत में निप्पॉन टोयोटा सेंटर, कलमश्शेरी में जापानी भाषा और वहाँ के शिष्टाचार पर दो दिवसीय प्रशिक्षण के बाद हम सभी जापान जाने के लिए तैयार थे।



दिनांक 2 फरवरी को सुबह 9 बजे मैं घर से निकला। शिपयार्ड से हम पाँच लोग कंपनी के टेम्पो ट्रैवलर से हवाई अड्डे पहुँचे। बाकी साथी भी वहाँ पहुँच गए। हममें से कई लोगों के लिए, जिन्होंने अब तक हवाई अड्डे और हवाई जहाज़ को केवल बाहर से देखा था, यह एक रोमांचक अनुभव था। औपचारिकताएँ पूरी करने के बाद 2:30 बजे हम सब हवाई जहाज़ के अंदर पहुंच गए और 3:15 बजे श्रीलंकन एयरलाइंस के हवाई जहाज़ ने उड़ान भरी। मन में खुशी के साथ थोड़ी घबराहट भी थी। शाम 4:15 बजे हम श्रीलंका के कोलम्बो हवाई अड्डे पर पहुँचे। वहां से रात 8:15 बजे को जापान की ओर की यात्रा शुरू होगी।

रात 7:45 बजे हम बस से हवाई जहाज़ तक पहुँचे। जापान के नारिता हवाई अड्डे तक लगभग 7 घंटे की यात्रा थी। मेरी सीट खिड़की के पास थी, लेकिन बाहर केवल अँधेरा था। दो लोगों की सीट पर मैं अकेला था । उड़ान भरने के बाद एयर होस्टेस ने भोजन परोसा। मैंने शाकाहारी भोजन माँगा, जिसमें थोड़ा चावल, पास्ता, सब्ज़ी और दही था। लेकिन मुझे उसका स्वाद बिल्कुल पसंद नहीं आया और मैं ठीक से खाना नहीं खा पाया।

हवाई जहाज़ अपनी गति से आगे बढ़ रहा था और बीच-बीच में हल्के झटके भी महसूस हो रहे थे। मुख्य

लाइटें बंद थीं और केवल हल्की रोशनी थी। धीरे-धीरे सभी यात्री सो गए, लेकिन मुझे नींद नहीं आ रही थी। मैंने पीछे बैठे अपने मित्र शरीफ को बुलाकर अपने पास बिठाया। कुछ देर बातें करने के बाद वह भी सो गया। समय बीतता गया और खिड़की से बाहर धीरे-धीरे रोशनी दिखाई देने लगी। आखिरकार, जापान के समयानुसार सुबह 8:20 बजे हम नारिता हवाई अड्डे पर उतरे। जापान और केरल के समय में 3 घंटे 30 मिनट का अंतर है। हवाई अड्डे की सभी औपचारिकताएँ पूरी करने के बाद हम बाहर आए।

सामान लेकर बाहर आए तो एओटीएस का बोर्ड लिए एक व्यक्ति हमारा इंतज़ार कर रहा था। बाहर निकलते ही कड़ाके की ठंड का एहसास हुआ और हाथ-पैर सुन्न होने लगे। थोड़ी देर बाद बस आई। ड्राइवर ने हमारा सामान रखा और हम बस में बैठ गए। अंदर हीटर की गर्मी से काफी राहत मिली और हमारी जापान यात्रा आगे बढ़ चली। बाहर के खूबसूरत नज़ारे देखकर हम सभी रोमांचित हो उठे और मोबाइल से फोटो-वीडियो लेने लगे। लगभग 100-110 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से एक घंटे की यात्रा के बाद हम एओटीएस प्रशिक्षण केंद्र टीकेसी पहुँचे। शाम को सभी मिलकर टोक्यो टावर देखने गए। रंग-बिरंगी रोशनी से जगमगाते टावर के ऊपर से टोक्यो शहर का शानदार नज़ारा देखा।

दिनांक 4 फरवरी को रीताकु विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ओबा हिरोयुकी की कक्षा शाम 4 बजे तक चली। वहाँ भोजन का समय निर्धारित था। कैंटीन में कम तेल वाला और स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने वाला भोजन परोसा जाता था। भोजन के बाद सभी को अपने बर्तन निर्धारित स्थान पर जमा करने होते थे। जापानी भोजन का स्वाद सभी को पसंद नहीं आया। मुझे कई बार ब्रेड, जैम और फलों से ही संतुष्ट होना पड़ा।

उसी शाम हम टीकेसी से हिरायामा स्थित एबीसी होटल के लिए 270 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से चलने वाली बुलेट ट्रेन शिंकनसेन से रवाना हुए। वहाँ टोयोटा प्रोडक्शन सिस्टम पर प्रशिक्षण हुआ। अगले दिन हमने कारिया-चिरायु पर्यावरण संघ क्लीन सेंटर का दौरा किया। यह जापान के अपशिष्ट प्रबंधन संयंत्रों में से एक था। जापान की बेहतरीन कचरा प्रबंधन व्यवस्था देखकर हम प्रभावित हुए। कचरे को अलग-अलग करके रिसाइकिल किया जाता है और शेष कचरे को जलाकर उत्पन्न भाप से बिजली बनाई जाती है।

उसी दिन शाम हम ओसाका स्थित केकेसी पहुँचे, जहाँ अगले छह दिन हमारा ठहराव था। वहाँ काक्कनाड की एक आईटी कंपनी और भारत के विभिन्न राज्यों से आए कई लोगों से मुलाकात हुई। अगले दो दिन सप्ताहांत होने के कारण कोई कक्षा नहीं थी। इसलिए सभी ने ओसाका घूमने का फैसला किया। शनिवार को भोजन के बाद हम एक मंदिर देखने गए और फिर अलग-अलग समूहों में बँटकर नंबा मार्केट पहुँचे। यह हमारे एर्णाकुलम के ब्रॉडवे मार्केट से लगभग 50 गुना बड़ा लगा। वहाँ चॉकलेट, स्थानीय भोजन, कपड़े और हर तरह की दुकानें थीं। कुछ खरीदारी करने के बाद शाम को हम वापस केकेसी लौट आए।

रविवार को भी हम ओसाका घूमने निकले। बर्फीली बारिश और कड़ाके की ठंड के कारण अधिकांश साथी ओसाका कैसल देखने चले गए, जबकि मैं और एक मित्र फिर से नंबा मार्केट पहुँचे। भाषा की समस्या के कारण गूगल ट्रांसलेटर का सहारा लिया। मेरे मित्र ने एक लैपटॉप खरीदा। शाम को कुछ सामान लेकर हम केकेसी लौट आए। रास्ते में सेब, ब्रेड, जैम और दूध भी खरीदा, क्योंकि रविवार को कैंटीन बंद रहती थी।

जापान में हमें लोग बहुत ईमानदार, विनम्र और





अनुशासित लगे। हर जगह स्वच्छता, शांति और सुंदरता दिखाई दी। सभी अपने काम को जिम्मेदारी से करते थे और बुजुर्ग भी आत्मनिर्भर थे। धूम्रपान और मद्यपान के लिए अलग स्थान निर्धारित थी। जगह-जगह वेंडिंग मशीनें और कूड़ेदान थे। तापमान कभी-कभी -1 डिग्री तक पहुँच जाता था। पैदल यात्रियों के लिए अलग रास्ते और यातायात नियमों का सख्ती से पालन हमें बहुत प्रभावित कर गया।

जापान में हर जगह आधुनिक तकनीक देखने को मिली। वहाँ के शौचालय भी अत्याधुनिक थे। छोटे से बाथरूम में कमोड, वॉश बेसिन, बाथटब और शॉवर की सुविधा थी। रोज़ साफ किए हुए तौलिये और नए टूथब्रश-पेस्ट दिए जाते थे। गर्म और ठंडे पानी की भी सुविधा थी। सबसे अधिक आश्चर्यजनक था स्मार्ट कमोड, जिसमें बटन दबाते ही सफाई और फ्लश की सुविधा मिलती थी। पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग-अलग सुविधाएँ भी थीं।

जापान यात्रा के दौरान हमें कई औद्योगिक संस्थानों का दौरा करने का अवसर मिला। इनमें ओसाका प्रीफेक्चर विश्वविद्यालय से पोत निर्माण पर कक्षा, एवेक्स में ऑटोमोबाइल स्पेयर पार्ट्स निर्माण, कानादेविया में सुरंग बनाने वाली विशाल मशीनें, हार्डलॉक इंडस्ट्री में नट-बोल्ट निर्माण और शिंकुरुशिमा सानॉयास शिपबिल्डिंग आदि शामिल थे । एक ही कंपनी के दो अलग-अलग स्थानों पर स्थित छोटे और बड़े शिपयार्ड देखने का अवसर मिला। हर जगह हमारे यार्ड की तुलना में कर्मचारियों की संख्या काफी कम थी।

12 फरवरी को केकेसी की ओर से हमें एक टास्क दिया गया और चार समूहों में बाँटा गया। हमें मेट्रो और बस से दिए गए स्थानों पर जाकर प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़कर शाम तक लौटना था। मेरे समूह को एक मंदिर और स्ट्रीट फूड मार्केट का कार्य मिला। बस में केवल ड्राइवर था। एक दिव्यांग यात्री की मदद के लिए ड्राइवर स्वयं नीचे उतरे और उन्हें सुरक्षित रूप से बस में बैठाया। यह देखकर मैंने सोचा-अगर यही स्थिति हमारे केरल में होती, तो क्या ऐसा ही होता?

उसी शाम हम केकेसी से हिरोशिमा पहुँचे और एक होटल में ठहरे। अगले दिन हमने विशाल जेएफई स्टील प्लांट का दौरा किया, जहाँ दो बड़े फर्नेस सहित पूरा संयंत्र बहुत बड़े क्षेत्र में फैला था। इसके बाद भारतीय रेस्तराँ में भोजन कर हम हिरोशिमा देखने गए। परमाणु बम की त्रासदी की याद दिलाने वाला स्मारक और संग्रहालय बेहद मार्मिक था। वहाँ तस्वीरों और युद्ध के अवशेषों के माध्यम से उस समय की भयावहता को समझाया गया था। ऑडियो गाइड की मदद से संग्रहालय की वस्तुओं की विस्तृत जानकारी भी मिलती थी। शाम को हम शिंकानसेन से वापस टीकेसी पहुँचे। जापान में समय की पाबंदी और हर काम का समय पर होना हमें बहुत प्रभावित करता था।

सप्ताहांत में हमने टीकेसी के पास स्थित अकीहाबारा मार्केट का दौरा किया। कुछ साथी डिज्नी वर्ल्ड गए, जबकि मैं और अन्य साथी खरीदारी में व्यस्त रहे। ठंड में कोई कमी नहीं थी। दोनों रातों को चार टीमों में बाँटकर सोमवार की कक्षा के लिए चार्ट तैयार किया। दिनांक 16 फरवरी की सुबह फिर से प्रो. ओबा की कक्षा हुई। हमने तैयार किए गए चार्ट प्रस्तुत किए और उनके बारे में जानकारी दी। शाम 3 बजे सभी को प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। वहाँ के प्रिंसिपल, प्रो. ओबा और हमारी अनुवादक मोमी को हमने भी स्मृति-चिह्न भेंट किए। इस तरह हमारा प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक और सुखद रूप से संपन्न हुआ।

मंगलवार सुबह 6:00 बजे हम मलेशियन एयरलाइंस से कोच्चि के लिए रवाना हुए। मलेशिया में कुछ देर रुकने के बाद भारतीय समयानुसार रात 2:30 बजे कोच्चि पहुँचे। टीम कैप्टन बिजु सर के साथ मैं उबर से शिपयार्ड पहुँचा और वहाँ से घर के लिए रवाना हुआ।

इस तरह सपनों के पंखों पर शुरू हुई हमारी जापान यात्रा सुखद यादों, नए अनुभवों और अनमोल सीखों के साथ समाप्त हुई। जापान की स्वच्छता, अनुशासन, तकनीक और समय की पाबंदी की कई खूबसूरत यादें हमेशा हमारे दिल में बसी रहेंगी। यह यात्रा मेरे जीवन की एक अविस्मरणीय और सुनहरी यात्रा बन गई!!!

राजभाषा मार्गदर्शिका

हर दिन एक कदम राजभाषा की ओर

- ''पहले हिंदी'' का सिद्धांत अपनाएँ।
- हिंदी में प्राप्त प्रत्येक पत्र का उत्तर यथासंभव हिंदी में दें।
- प्रचलित कार्यालयीन वाक्यांशों एवं मानक अभिव्यक्तियों का नियमित प्रयोग करें।
- बार–बार प्रयुक्त होने वाले वाक्यों की हिंदी नोटबुक तैयार करें।
- हिंदी में ई–मेल भेजने की आदत विकसित करें।
- अपने कंप्यूटर में हिंदी टाइपिंग की सुविधा सदैव सक्रिय रखें। प्रतिदिन 10 मिनट यूनिकोड हिंदी टंकण का अभ्यास करें, जिससे आपकी टाइपिंग की गति और दक्षता दोनों में निरंतर वृद्धि होगी।
- राजभाषा शब्दावली का उपयोग करें।
- पुराने हिंदी प्रारूपों का अध्ययन करें।
- अनुवाद उपकरण का सीमित उपयोग करें, हिंदी पढ़ें, समझें और स्वयं लिखें।
- महत्त्वपूर्ण कार्यालयीन प्रारूप हिंदी में सुरक्षित रखें, ताकि भविष्य में उनका पुनः उपयोग किया जा सके।
- बैठकों के कार्यवृत्त एवं कार्यसूची यथासंभव हिंदी में तैयार करें।
- सहकर्मियों को भी हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करें और उनके साथ हिंदी में संवाद को प्रोत्साहित करें।
- हिंदी कार्यशालाओं एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों में नियमित भाग लें।
- प्रत्येक माह हिंदी में पत्राचार एवं टिप्पण की संख्या बढ़ाने का व्यक्तिगत लक्ष्य निर्धारित करें।
- आवश्यकता पड़ने पर राजभाषा अनुभाग से सहायता एवं मार्गदर्शन प्राप्त करें।
- हिंदी को दायित्व नहीं, बल्कि कार्यकुशलता, प्रभावी संप्रेषण एवं व्यावसायिक उत्कृष्टता का सशक्त माध्यम समझें।

हिंदी में पत्राचार और टिप्पण लिखना केवल राजभाषा नीति का पालन नहीं, बल्कि सुगम, प्रभावी, पारदर्शी तथा उत्तरदायी प्रशासन की पहचान है। याद रखें - राजभाषा का प्रभावी कार्यान्वयन केवल नियमों से नहीं, बल्कि कर्मचारियों की सकारात्मक सहभागिता और सतत प्रयासों से संभव होता है।

कोच्ची नराकास – संयुक्त हिंदी पखवाडा समारोह

• कोच्ची नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य संगठनों में 200 से अधिक कर्मचारी वाले सार्वजनिक उपक्रमों में वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा हिंदी के उत्तम निष्पादन केलिए कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड को समिति की **राजभाषा शील्ड (प्रथम पुरस्कार)** प्राप्त हुई ।



• नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कोच्ची द्वारा वर्ष 2024-25 के दौरान कार्यालय ने राजभाषा गृह पत्रिका **'सागर रत्न'** केलिए **प्रथम पुरस्कार** हासिल किया । साथ ही कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा उत्तम हिंदी गृह पत्रिका केलिए प्रायोजित ट्रॉफी भी स्वीकार किया ।



राजभाषा समाचार

• संयुक्त हिंदी पखवाडा समारोह के सिलसिले में आयोजित प्रशासनिक शब्दावली और टिप्पणी, अनुवाद, प्रश्नोत्तरी, और सुलेख आदि प्रतियोगिताओं में कर्मचारियों ने पुरस्कार प्राप्त करते हुए कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड ने **रण्णर अप ट्रॉफी** हासिल किया।





श्रीमती सुमी एस, वरिष्ठ प्रबंधक
अनुवाद–प्रथम/प्रशासनिक शब्दावली–तृतीय



श्रीमती अपिला, सहायक–सुलेख–प्रथम



श्रीमती शारिका सी शशिधरन, वरिष्ठ आशुलिपिक
प्रश्नोत्तरी–प्रथम



श्री अनुराज कुमार आई, सहायक अभियंता
प्रश्नोत्तरी–प्रथम



श्री धनेश मेनोन, सहायक–अनुवाद–सांत्वना

राजभाषा समाचार

गृह मंत्रालय, भारत सरकार से राजभाषा निरीक्षण





दिनांक 19.06.2026 को क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (कोच्ची), गृह मंत्रालय, भारत सरकार से श्री निर्मला कुमार दुबे, उप निदेशक ने कोचीन शिपयार्ड में राजभाषा से संबंधित गतिविधियों की समीक्षा की । एक पावर पॉइंट प्रस्तुतीकरण के ज़रिए कार्यालय के राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित विस्तृत रिपोर्ट प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा प्रस्तुत किया गया । उन्होंने राजभाषा नीति के कार्यान्वयन की समीक्षा की, नोडल अधिकारियों के साथ विभिन्न पहलुओं पर संवाद किया, हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु किए गए प्रयासों की सराहना की तथा संगठन में राजभाषा के कार्यान्वयन को और सुदृढ़ बनाने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव प्रदान किए।

हिंदी कौशल विकास कार्यक्रम



दिनांक 08.05.2026 को कर्मचारियों के बच्चों के लिए हिंदी कौशल विकास कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य बच्चों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि बढ़ाना तथा उनकी भाषा, लेखन एवं अभिव्यक्ति क्षमता का विकास करना था।

इस कार्यक्रम में लगभग 70 बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिताओं को आयु एवं कक्षा के अनुसार निम्नलिखित श्रेणियों में आयोजित किया गया: ● **श्रेणी** 1 – **कक्षा** 1 **से** 4 ● **श्रेणी** 2 – **कक्षा** 5 **से** 7 ● **श्रेणी** 3 – **कक्षा** 8 **से** 12



प्रत्येक श्रेणी के लिए अलग-अलग हिंदी आधारित प्रतियोगिताएं (श्रुतलेख, सुलेख, फिल्मी गीत, कविता पाठ) एवं गतिविधियों का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं का उद्देश्य बच्चों की हिंदी भाषा सीखने की क्षमता, शब्द ज्ञान, उच्चारण, लेखन कौशल तथा आत्मविश्वास को बढ़ावा देना था।

बच्चों ने सभी प्रतियोगिताओं में अत्यंत उत्साह एवं जोश के साथ भाग लिया तथा अपनी प्रतिभा और रचनात्मकता का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कार्यक्रम के दौरान बच्चों में सीखने की सकारात्मक भावना एवं स्वस्थ प्रतिस्पर्धा देखने को मिली।

राजभाषा समाचार

कार्यक्रम का आयोजन सफलतापूर्वक एवं सुव्यवस्थित ढंग से संपन्न हुआ। निर्णायक के रूप में श्री संपत कुमार पी एन, सलाहकार (सीएसआर) ने अपनी उपस्थिति दर्ज की। आयोजकों, अभिभावकों तथा सहयोगी कर्मचारियों के सहयोग से यह कार्यक्रम अत्यंत प्रेरणादायक एवं यादगार बना। समग्र रूप से हिंदी कौशल विकास कार्यक्रम बच्चों के लिए ज्ञानवर्धक, मनोरंजक एवं प्रेरणादायक सिद्ध हुआ तथा हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य को सफलतापूर्वक पूरा किया गया।





कॉलेज छात्रों केलिए कैरियर विकास संगोष्ठी





निर्मला कॉलेज, मुवाट्टुपुषा के हिंदी विभाग के एम.ए./बी.ए. छात्रों/ शोधार्थियों के लिए दिनांक 24 मार्च 2026 को एक कैरियर विकास संगोष्ठी का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के सहयोग से आयोजित किया गया, जिसका उद्देश्य छात्रों को विभिन्न कैरियर विकल्पों से परिचित कराना तथा उनके पेशेवर कौशलों को सुदृढ़ बनाना था।

यह संगोष्ठी कॉलेज परिसर में आयोजित की गई, जिसमें हिंदी विभाग के कुल 55 छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य छात्रों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना और उनके कौशल विकास को प्रोत्साहित करना था, ताकि वे भविष्य में बेहतर कैरियर अवसरों का लाभ उठा सकें।

राजभाषा समाचार



कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. मधुशील आयिल्यत्त थे, जो भारतीय रिज़र्व बैंक, कोच्ची में सहायक महाप्रबंधक के रूप में कार्यरत हैं। उन्होंने अपने व्याख्यान में कैरियर योजना, कौशल विकास तथा सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में उपलब्ध अवसरों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने छात्रों को संचार कौशल, अनुकूलन क्षमता तथा निरंतर सीखने के महत्व से अवगत कराया। साथ ही उन्होंने प्रायोगिक साक्षात्कार (मॉक इंटरव्यू) की प्रक्रिया को प्रत्येक छात्र के साथ अभ्यास कराते हुए उसे प्रभावी ढंग से समझाया।

डॉ. मधुशील आयिल्यत्त ने हिंदी छात्रों के लिए उपलब्ध विभिन्न कैरियर विकल्पों जैसे अनुवाद, सामग्री लेखन, अध्यापन, सिविल सेवा, बैंकिंग तथा कॉर्पोरेट क्षेत्र के बारे में भी विस्तार से बताया। उन्होंने छात्रों को डिजिटल माध्यमों का प्रभावी उपयोग करते हुए अपनी रोज़गार क्षमता बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। व्याख्यान के उपरांत एक संवादात्मक सत्र आयोजित किया गया, जिसमें छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लेते हुए अपने प्रश्न प्रस्तुत किए। इस सत्र के माध्यम से उन्हें कैरियर विकल्पों, उच्च शिक्षा तथा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी से संबंधित महत्वपूर्ण एवं उपयोगी जानकारी प्राप्त हुई।

अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम का औपचारिक समापन हुआ, जिसमें मुख्य वक्ता, आयोजन समिति तथा सभी प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। समग्र रूप से यह कैरियर विकास संगोष्ठी अत्यंत ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं सफल सिद्ध हुई, जिसने विद्यार्थियों के शैक्षणिक एवं व्यावसायिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया।

हिंदी लघुकथा प्रतियोगिता–
नराकास (दक्षिणी क्षेत्र)–विशेष सम्मान

श्री हरिकृष्णन जी, प्रबंधक, कर्मचारी संबंध विभाग ने दिनांक 16 जनवरी 2026 को तिरुवनंतपुरम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा आयोजित हिंदी लघुकथा लेखन प्रतियोगिता में प्रशंसा पुरस्कार प्राप्त कर कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड को गौरवान्वित किया है। इस प्रतियोगिता में दक्षिण भारत क्षेत्र से कुल 87 प्रविष्टियां प्राप्त हुई, जिससे यह उपलब्धि और भी उल्लेखनीय बन जाती है।



राजभाषा समाचार

हिंदी गृह पत्रिका- सागर रत्न का विमोचन

हिंदी गृह पत्रिका के 19वें अंक का विमोचन दिनांक 12.03.2026 को श्री जोस वी. जे., निदेशक (वित्त) एवं अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (अतिरिक्त प्रभार) के करकमलों से किया गया। इस अवसर पर पत्रिका की प्रथम प्रति श्री हरिकृष्णन एस., निदेशक (प्रचालन) ने अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक से प्राप्त की। इस अवसर पर, श्री राजेष गोपालकृष्णन, निदेशक (तकनीकी) और श्री सुबाष ए के, महाप्रबंधक (मानव संसाधन एवं अध्ययन विकास) ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति सुनिश्चित की।



सीएसएल कर्मचारियों केलिए बोलचाल की हिंदी प्रशिक्षण



सीएसएल के कर्मचारियों के लिए दिनांक 07 अप्रैल 2026 से बोलचाल की हिंदी के प्रशिक्षण आयोजित किए जा रहे हैं। ये कक्षाएं सप्ताह में दो दिन आयोजित की जाती हैं तथा प्रत्येक सत्र की अवधि एक घंटा है। प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 30 कर्मचारी भाग ले रहे हैं। इस पहल का उद्देश्य प्रतिभागियों के हिंदी बोलने के कौशल में सुधार करना तथा दैनिक संवाद में हिंदी भाषा के प्रयोग के प्रति उनका आत्मविश्वास बढ़ाना है।

शिक्षा संवर्धन हेतु हिंदी पुस्तक वितरण अभियान

छात्रों के बीच हिंदी भाषा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से, कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड द्वारा सीएसआर समर्थित दो विद्यालयों – गवर्नमेंट हायर सेकेंडरी स्कूल, पेषक्कापिल्ली तथा गवर्नमेंट हायर सेकेंडरी स्कूल, चात्तमट्टम में हिंदी पुस्तकों का वितरण किया गया। इस पहल का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिंदी भाषा में दक्षता बढ़ाने तथा उत्तम पठन-पाठन की आदत विकसित करने के लिए प्रेरित करना है।



राजभाषा समाचार



कॉलेज छात्रों केलिए इंटर्नशिप कार्यक्रम

कॉलेज छात्रों के बीच राजभाषा हिंदी और कार्यालयीन कार्यों से परिचित कराने के उपलक्ष्य से कोचीन शिपयार्ड में इंटर्नशिप कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। अप्रैल – जून, 2026 में 2 छात्रों ने श्री शंकरा विद्यापीठम कॉलेज, वलयनचिरंगरा से इंटर्नशिप कार्यक्रम सफल रूप से पूरा किया। उन्हें राजभाषा नीति, वार्षिक कार्यक्रम, पत्राचार, टिप्पण व आलेखन, कंप्यूटर में टाइपिंग, रिकॉर्ड / फाइल प्रबंधन आदि में ज्ञान प्राप्त करने का सुअवसर मिला।

विशेषीकृत हिंदी टिप्पण व आलेखन प्रशिक्षण

कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कार्यालय में दिनांक 24.02.2026 को जनवरी – मार्च 2026 तिमाही केलिए, विशिष्ट हिंदी टिप्पण एवं आलेखन पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य सरकारी एवं प्रशासनिक कार्यों में सामान्यतः प्रयुक्त हिंदी टिप्पण, आलेखन एवं कार्यालयीन पत्राचार में कर्मचारियों की दक्षता बढ़ाना था। सत्र का संचालन श्रीमती लिजा जी.एस., सहायक प्रबंधक (राजभाषा) ने किया, जिन्होंने राजभाषा नियमों, शुद्ध लेखन तकनीकों एवं कार्यालयीन संचार से संबंधित व्यावहारिक अभ्यासों पर विस्तृत मार्गदर्शन प्रदान किया गया। कार्यशाला में कुल 20 कार्यपालक प्रशिक्षार्थियों ने भाग लिया और सभी प्रशिक्षण गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लिया। इस कार्यक्रम ने कार्यालयीन कामकाज में हिंदी के प्रयोग को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।



राजभाषा समाचार

नकद पुरस्कार योजना

- कार्यालयीन काम हिंदी में करने हेतु वर्ष के दौरान नकद पुरस्कार योजना में कुल 85 कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया ।
- दसवीं कक्षा में हिंदी में उच्च अंक प्राप्त करने से संबंधित नकद पुरस्कार योजना में कुल 41 कर्मचारियों के बच्चों ने सक्रिय रूप से भाग लिया ।

नव नियुक्त कार्यपालक प्रशिक्षार्थियों के लिए हिंदी कार्यशाला



राजभाषा के प्रभावी क्रियान्वयन तथा नव नियुक्त कार्यपालक प्रशिक्षार्थियों को कार्यालयीन हिंदी के प्रति जागरूक बनाने के उद्देश्य से हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का संचालन श्रीमती लिजा जी एस, सहायक प्रबंधक ने किया। उन्होंने प्रतिभागियों को कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के व्यावहारिक उपयोग, राजभाषा नीति एवं नियमों, आधिकारिक पत्राचार, एफएलएम में हिंदी के प्रयोग तथा सरल एवं प्रभावी हिंदी लेखन के विभिन्न पहलुओं से अवगत कराया। उन्होंने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को सहज और उपयोगी बनाने के लिए अनेक व्यावहारिक उदाहरण भी प्रस्तुत किए। कार्यशाला के दौरान प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की तथा विभिन्न गतिविधियों और संवादात्मक सत्रों के माध्यम से अपने प्रश्नों का समाधान प्राप्त किया। कुल 24 प्रशिक्षार्थियों ने अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की ।

प्रेरक पहल

1. श्रीमती लिजा जी एस, सहायक प्रबंधक द्वारा दिनांक 18.03.2026 को रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया, कोच्ची के कर्मचारियों केलिए कार्यशाला का संचालन किया गया । इस कार्यशाला का उद्देश्य प्रतिभागियों के राजभाषा कार्यान्वयन में कौशल और ज्ञान को बढ़ाना था।
2. दिनांक 05.06.2026 को आईआरईएल द्वारा आयोजित राजभाषा सम्मेलन में कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड से श्रीमती सरिता जी, प्रबंधक, श्रीमती अषिता के ए, वाणिज्यिक सहायक, सामग्री विभाग और श्रीमती दिव्या के वी, वाणिज्यिक सहायक, निदेशक (तकनीकी) का कार्यालय ने अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की ।
3. कर्मचारियों के बीच हिंदी भाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने तथा हिंदी सीखने की प्रक्रिया को अधिक सरल, सुगम और प्रभावी बनाने के उद्देश्य से 'बोलचाल हिंदी' कक्षा का मॉड्यूल कर्मयोगी पोर्टल पर अपलोड किया गया। इस मॉड्यूल में सामान्य संवाद में प्रयुक्त होने वाले हिंदी शब्दों, वाक्यांशों और वाक्यों को सरल एवं व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे कर्मचारी हिंदी भाषा का सहजता से अध्ययन कर सकें और अपने कार्यस्थल पर उसका अधिकाधिक उपयोग कर सकें।

कंपनी समाचार

'मालवन'–भारतीय नौसेना को दूसरी पनडुब्बी रोधी युद्धक उथले जल पोत की सुपुर्दगी



कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड (सीएसएल), कोच्ची द्वारा स्वदेशी रूप से डिजाइन और निर्मित आठ एएसडब्ल्यू एसडब्ल्यूसी (पनडुब्बी रोधी युद्धक उथले जल पोत) में से दूसरा ''मालवन'' दिनांक 31 मार्च 2026 को सीएसएल, कोच्ची में भारतीय नौसेना को सौंपा गया था, जो रक्षा निर्माण में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक महत्वपूर्ण और उल्लेखनीय कदम है तथा सरकार के ''आत्मनिर्भर भारत'' के दृष्टिकोण को मज़बूत करता है। सुपुर्दगी प्रोटोकॉल पर डॉ. हरिकृष्णन एस, निदेशक (प्रचालन) और कमांडर प्रवीण कुमार तिवारी, कमांडिंग ऑफिसर (नामित), ''मालवन'' के बीच हस्ताक्षर किए गए। इस अवसर पर श्री जोस वी जे, अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक, राजेष गोपालकृष्णन, निदेशक (तकनीकी), सीएसएल,



कमोडोर अनूप मेनन, युद्धपोत उत्पादन अधीक्षक, कोच्ची, कमोडोर डी सेनगुप्ता, सीएसओ (तक.), पश्चिमी नौसेना कमान, डॉ. सी पांडी सेल्वा दुरई, आईओएफएस, मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री षिराज़ वी पी, कार्यकारी निदेशक (पोत निर्माण) और भारतीय नौसेना और सीएसएल के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।

''मालवन'' को यह नाम महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग जिले में ऐतिहासिक और रणनीतिक तटीय शहर से मिला है। 78 मीटर लंबाई का यह पोत डीजल इंजन–वाटरजेट प्रोपल्शन प्रणाली द्वारा संचालित सबसे बड़ा भारतीय नौसेना युद्धपोत है और इसमें अत्याधुनिक हल्के वज़न वाले टारपीडो, स्वदेशी एएसडब्ल्यू रॉकेट और उन्नत उथले पानी के सोनार लगे हैं। एएसडब्ल्यू एसडब्ल्यूसी पोत का शामिल होना 90% स्वदेशी सामग्री के साथ भारतीय नौसेना की उथले जल में पनडुब्बी रोधी युद्ध क्षमताओं को काफी बढ़ावा देगा।

'मछलीपट्टनम' का जलावतरण– समुद्री शक्ति की ओर एक और सशक्त कदम

कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड ने भारतीय नौसेना के लिए निर्मित किए जा रहे आठ पनडुब्बी रोधी युद्धक उथले जल पोतों की श्रृंखला में सातवें पोत 'मछलीपट्टनम' (बीवाई 529) का जलावतरण किया। पोत का शुभारंभ श्रीमती गूलरुख आनंद ने किया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में वाइस एडमिरल अतुल आनंद, पीवीएसएम, एवीएसएम, वीएसएम सहित सीएसएल और भारतीय नौसेना के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। श्री जोस वी जे, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड, डॉ. हरिकृष्णन एस, निदेशक (प्रचालन) और श्री राजेष गोपालकृष्णन, निदेशक (तकनीकी), सीएसएल, एचक्यूएसएनसी के रियर एडमिरल दीपक सिंघल, वीएसएम, सीएसओ (प्रशिक्षण), डॉ. सी पांडी सेल्वा दुरई,



कंपनी समाचार



आईओएफएस, मुख्य सतर्कता अधिकारी, सीएसएल, दक्षिणी नौसेना कमान और आईएचक्यू एमओडी (एन) के वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।

'मछलीपट्टनम' का जलावतरण इस प्रतिष्ठित परियोजना की निरंतर प्रगति और भारतीय नौसेना की समुद्री क्षमताओं को सुदृढ़ करने में सीएसएल के योगदान को रेखांकित करता है। 78 मीटर लंबा और लगभग 900 टन विस्थापन वाला यह पोत तटीय जलक्षेत्रों में पनडुब्बी रोधी अभियान, निम्न तीव्रता वाले समुद्री अभियान तथा माइन बिछाने संबंधी अभियानों के लिए डिजाइन किया गया है। इसकी अधिकतम गति 25 समुद्री मील तथा सहनशक्ति 1,800 समुद्री मील है।

सीएसएल की एक और उपलब्धि–सेतुसागर III का सफल जलावतरण

सुरक्षित, आधुनिक और सशक्त जल परिवहन की ओर सीएसएल की पहल

दिनांक 22 जून 2026 को सीएसएल ने कोच्चि नगर निगम के लिए निर्मित तीसरी डबल–एंडेड रो–रो फेरी 'सेतु सागर III (बीवाई 167)' का सफलतापूर्वक जलावतरण किया। इस पोत का जलावतरण कोच्चि नगर निगम की माननीय महापौर एडवोकेट मिनिमोल वी. के. द्वारा पार्षदों, श्री जोस वी. जे., अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक (सीएसएल), निदेशकों, विशिष्ट अतिथियों तथा कर्मचारियों की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ। दि.12.07.2026 को केरल के माननीय मुख्यमंत्री श्री वी.डी. सतीशन द्वारा वाइपिन स्थित रो रो जेट्टी पर सेतुसागर – III का लोकार्पण किया गया।



सीएसएल ऐसे आधुनिक और विश्वसनीय पोतों के निर्माण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पुनः दोहराता है, जो समुदायों को सशक्त बनाते हैं तथा लोगों के दैनिक जीवन को अधिक सुगम, सुरक्षित और बेहतर बनाते हैं।

कंपनी समाचार

राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस 2026 : सुरक्षित कार्यस्थल, सशक्त भविष्य



कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड (सीएसएल) ने 55वां राष्ट्रीय सुरक्षा दिवस उत्साह एवं गरिमा के साथ मनाया। इस अवसर पर कार्यस्थल की सुरक्षा तथा प्रत्येक कर्मचारी के कल्याण के प्रति कंपनी की अटूट प्रतिबद्धता को पुनः दोहराया गया।

इस वर्ष की थीम ''सुरक्षा को सुदृढ़ बनाने हेतु सहभागिता, शिक्षित करें एवं सशक्त बनाएं'' के अनुरूप जागरूकता, प्रशिक्षण तथा उत्तरदायित्वपूर्ण व्यवहार के माध्यम से सक्रिय सुरक्षा संस्कृति को बढ़ावा देने का संदेश दिया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जोस वी. जे. ने की। इस अवसर पर निदेशकगण, वरिष्ठ अधिकारी, कर्मचारी तथा सीएसएल के अन्य हितधारक उपस्थित रहे। सभी ने सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए सुरक्षित एवं दुर्घटना-मुक्त कार्यस्थल के निर्माण का संकल्प दोहराया।





सीएसएल में 'जुग जुग जियो अभियान' का शुभारंभ



भारत सरकार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के निर्देशानुसार 16वें भारतीय अंगदान दिवस के अवसर पर 03 अगस्त 2026 को कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड (सीएसएल) में वर्षभर चलने वाले राष्ट्रव्यापी जन-जागरूकता अभियान 'जुग जुग जियो अभियान' का शुभारंभ किया गया।

प्रशासनिक भवन के मुख्य पोर्टिको में आयोजित कार्यक्रम में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जोस वी. जे. ने निदेशकों एवं वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में अभियान का उद्घाटन किया तथा कर्मचारियों को अंग एवं ऊतक दान की प्रतिज्ञा दिलाई। इस अवसर पर कर्मचारियों को अंगदाता के रूप में पंजीकरण करने तथा अंगदान के महत्व के प्रति समाज में जागरूकता फैलाने का आह्वान किया गया।



सीएसएल की विभिन्न इकाइयों एवं विभागों में भी अंगदान प्रतिज्ञा कार्यक्रम आयोजित कर इस मानवीय अभियान में सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित की गई।

छात्रों के लिए सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम

सुरक्षित भविष्य की ओर एक सार्थक पहल





सुरक्षा संस्कृति को बढ़ावा देने की अपनी सतत प्रतिबद्धता के अंतर्गत कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड ने दिनांक 4 जुलाई 2026 को सीएसएल एवं उप-ठेका कर्मचारियों के कक्षा 8 से 12 तक अध्ययनरत बच्चों के लिए सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया।

कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों में सुरक्षा के प्रति जागरूकता विकसित करना तथा उन्हें दैनिक जीवन एवं आपातकालीन परिस्थितियों में अपनाए जाने वाले सुरक्षा उपायों से परिचित कराना था। छात्रों ने पूरे उत्साह एवं रुचि के साथ कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड ने कार्यस्थल के साथ-साथ परिवार एवं समाज में भी सुरक्षा संस्कृति को सुदृढ़ बनाने की अपनी प्रतिबद्धता को पुनः रेखांकित किया।

कंपनी समाचार

जापान से लौटे सीएसएल के 20 कर्मचारी: वैश्विक प्रशिक्षण का सफल समापन



कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड के 20 कर्मचारियों का 7वां बैच प्रतिष्ठित एओटीएस जापान प्रशिक्षण कार्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा कर स्वदेश लौट आएं। इस प्रशिक्षण ने प्रतिभागियों को जापान के उन्नत औद्योगिक वातावरण, आधुनिक कार्यस्थल प्रणालियों, प्रचालन उत्कृष्टता की सर्वोत्तम कार्य-पद्धतियों तथा प्रभावी प्रबंधन प्रक्रियाओं का व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया।

प्रशिक्षण के दौरान कर्मचारियों ने केवल तकनीकी एवं व्यावसायिक ज्ञान ही अर्जित नहीं किया, बल्कि जापान की समृद्ध संस्कृति, अनुशासित कार्य-संस्कृति और सामाजिक मूल्यों को भी निकट से समझा। इस अनुभव ने उनके पेशेवर कौशल के साथ-साथ वैश्विक दृष्टिकोण को भी नई दिशा दी।

यह अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण भविष्य में कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड में वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाने, नवाचार को बढ़ावा देने तथा संगठनात्मक उत्कृष्टता को और सुदृढ़ करने की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

स्वस्थ जीवन की ओर योग का संकल्प



दिनांक 21 जून 2026 को ''स्वस्थ वृद्धावस्था के लिए योग'' थीम के साथ सीएसएल ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 2026 का उत्साहपूर्वक आयोजन किया। वरिष्ठ अधिकारियों, कर्मचारियों तथा उनके परिवारों ने पूरे उत्साह के साथ योग सत्र में भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन पतंजलि योग प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केंद्र के प्रशिक्षकों द्वारा किया गया।

योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि शरीर, मन और आत्मा के संतुलन का समग्र विज्ञान है। नियमित योगाभ्यास स्वस्थ, सक्रिय और संतुलित जीवनशैली को अपनाने की प्रेरणा देता है तथा स्वस्थ एवं सुखद भविष्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस आयोजन ने सभी प्रतिभागियों को योग को अपने दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बनाने का संदेश दिया।





योग : स्वस्थ जीवन का आधार



योग भारत की प्राचीन परंपरा है, जो शरीर और मन के बीच संतुलन स्थापित करता है। नियमित योगाभ्यास से शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक शांति, एकाग्रता और कार्यक्षमता में वृद्धि होती है। आज की व्यस्त जीवनशैली में योग तनाव कम करने और सकारात्मक सोच विकसित करने का सरल एवं प्रभावी माध्यम है। स्वस्थ, संतुलित और ऊर्जावान जीवन के लिए योग को अपनी दैनिक दिनचर्या का हिस्सा बनाना चाहिए।

''योग अपनाएँ, स्वस्थ रहें और जीवन में सकारात्मकता लाएँ।



नौवहन शब्दावली

1	घाट शुल्क	Wharfage
2	रस्सी से खींचना	Warping
3	लंगर खोलना	Unmoor
4	गोदी–बहिर्गमन	Undocking
5	पारगमन क्षेत्र	Transit area
6	अनुरेखन	Tracing
7	माल का भंडारण	Stowage
8	नौचालन	Sailing
9	पतवार	Rudder
10	प्रतिधारण	Retention
11	घाट निर्माण कार्य	Quay works
12	प्रवेश पत्तन	Port of entry
13	उपरिव्यय शुल्क	Overhead charges
14	जलयानों का प्रचालन	Operation of vessels
15	अपतटीय	Offshore
16	नौचालन	Navigation
17	समुद्री सर्वेक्षण	Marine Survey
18	परिसमापन हानि	Liquidated Damages
19	जलावतरण	Launching
20	अंतर्देशीय जलमार्ग	Inland waterways



सिनी पी एस
रिनोय जॉण की सुपत्नी

व्हाइट फॉरेस्ट केक

सामग्री (वैनिला स्पॉन्ज केक के लिए) :

1. मैदा – 1 कप
2. बेकिंग पाउडर – 1 छोटा चम्मच
3. बेकिंग सोडा – $^{1}/_{4}$ छोटा चम्मच
4. नमक – 1 चुटकी
5. चीनी – $^{3}/_{4}$ कप
6. अंडे – 4
7. वैनिला एसेंस – 1 छोटा चम्मच
8. सनफ्लावर ऑयल – $^{1}/_{2}$ कप
9. दूध – 2 बड़े चम्मच
10. सिरका – $^{1}/_{2}$ छोटा चम्मच



फिलिंग और सजावट के लिए:

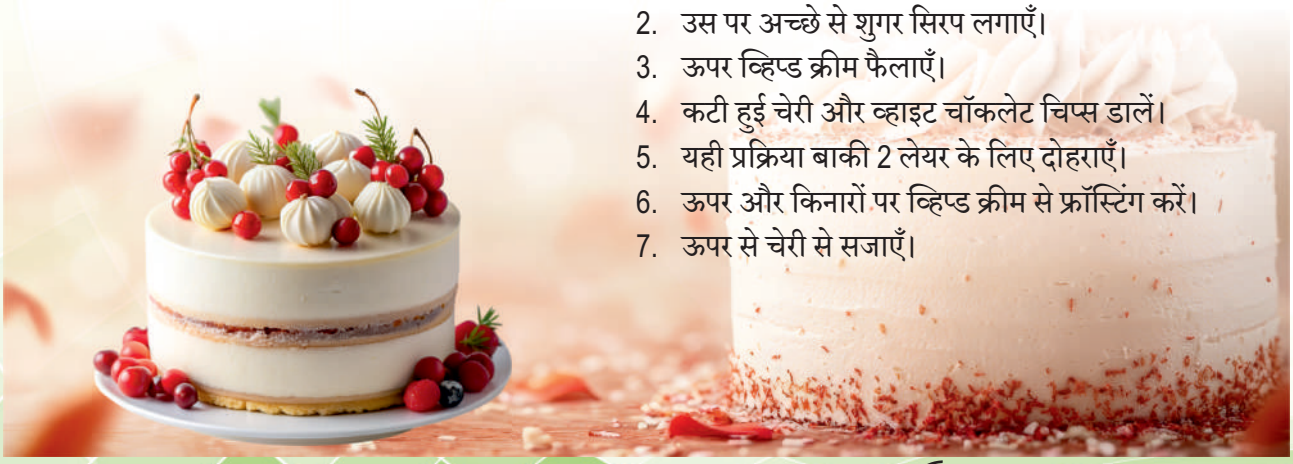
1. व्हिपिंग क्रीम (ठंडी) – लगभग 1 $^{1}/_{2}$ कप
2. शुगर सिरप – 1 कप
3. चेरी (कटी हुई) – 1 कप
4. व्हाइट चॉकलेट चिप्स – 100 ग्राम

स्पॉन्ज केक तैयार करने की विधि :

1. ओवन को 180°C पर या स्टव टॉप को 10 मिनट के लिए प्रीहीट करें।
2. केक टिन में तेल लगाकर बटर पेपर बिछाएँ।
3. अंडे और चीनी को एक साथ फेंटें जब तक मिश्रण हल्का, फीका और फूला हुआ न हो जाए।
4. इसमें तेल और वैनिला एसेंस डालकर अच्छी तरह मिलाएँ।
5. दूध डालें और हल्के हाथ से मिलाएँ।
6. मैदा, बेकिंग पाउडर, बेकिंग सोडा और नमक को छान लें।
7. सूखी सामग्री को गीले मिश्रण में धीरे-धीरे मिलाएँ।
8. बैटर को केक टिन में डालें और 30-35 मिनट तक बेक करें।
9. केक को पूरी तरह ठंडा होने दें और 3 लेयर में काट लें।
10. ठंडी व्हिपिंग क्रीम को सॉफ्ट पीक आने तक फेंटें।

केक असेंबल करने की विधि :

1. केक की एक लेयर को केक बोर्ड या प्लेट पर रखें।
2. उस पर अच्छे से शुगर सिरप लगाएँ।
3. ऊपर व्हिप्ड क्रीम फैलाएँ।
4. कटी हुई चेरी और व्हाइट चॉकलेट चिप्स डालें।
5. यही प्रक्रिया बाकी 2 लेयर के लिए दोहराएँ।
6. ऊपर और किनारों पर व्हिप्ड क्रीम से फ्रॉस्टिंग करें।
7. ऊपर से चेरी से सजाएँ।



बोलचाल हिंदी की

रेल यात्रा के दौरान बातचीत



पहला मुसाफिर : आप कहाँ से आ रहे हैं?
First Passenger- From which place are you coming sir?

दूसरा मुसाफिर : मैं कोच्ची से आ रहा हूँ।
Second Passenger: I am coming from Kochi

पहला मुसाफिर : आप कहाँ जा रहे हो?
First Passenger- Where are you going?

दूसरा मुसाफिर : मैं दिल्ली जा रहा हूँ।
Second Passenger: I am going to Delhi.

पहला मुसाफिर : मैं भी दिल्ली जा रहा हूँ।
First Passenger- I am also going to Delhi.

दूसरा मुसाफिर : तो हमारा समय ठीक कटेगा।
Second Passenger: Then our time will be spent nicely

पहला मुसाफिर : आप किस काम से दिल्ली जा रहे हैं?
First Passenger- what business are you going to Delhi?

दूसरा मुसाफिर : मैं केन्द्र सरकार कर्मचारी हूँ। मेरा स्थानांतरण दिल्ली को हो गई है।
Second Passenger: I am a central government Employee. I have been transferred to Delhi.

पहला मुसाफिर : तो आप के परिचित कोई दिल्ली में हैं?
First Passenger- Is there any person known to you at Delhi?

दूसरा मुसाफिर : जी नहीं, मुझे होटल में ही रहना होगा।
Second Passenger: No sir, I have to stay in the hotel only.

पहला मुसाफिर : होटल में क्यो? हमारे घर आइए।
First Passenger- Why in hotel? Come to my house.

दूसरा मुसाफिर : क्या आप दिल्ली के ही रहने वाले हैं?
Second Passenger: Are you a resident of Delhi?

पहला मुसाफिर : जी हां। और क्या? आप को संकोच करने की आवश्यकता नहीं है।
First Passenger- What else? There is no need for you to feel delicate.

दूसरा मुसाफिर : बहुत धन्यवाद, मैं आपकी उदारता के लिए हृदय से आभारी हूँ।
Second Passenger: Many Thanks. I am tied with your kindness.

पहला मुसाफिर : आप को दफ़्तर कब जाना होगा ?
First Passenger - When you have to go to the office?

दूसरा मुसाफिर : दिल्ली पहुँचने के बाद तीसरे दिन दफ़्तर जाना पडेगा।
Second Passenger: I have to attend the office on the third day of my reaching Delhi.

पहला मुसाफिर : तो आप एक बार दिल्ली के दर्शनीय स्थान देख सकेंगे।
First Passenger- Then you can see the worth seeing places at Delhi.

दूसरा मुसाफिर : आप की कृपा से सब कुछ देखनेवाला हूँ।
Second Passenger: With your Kind help I am going to see all these things.

पहला मुसाफिर : जरूर, मैं ही आप को ले चलूँगा और ये सब दिखाउँगा।
First Passenger- Certainly I shall myself take you with me and show all these things.

दूसरा मुसाफिर : आप को कष्ट दे रहा हूँ।
Second Passenger: I am giving you trouble.

पहला मुसाफिर : कोई कष्ट नहीं।
First Passenger- There is no trouble at all.

दूसरा मुसाफिर : आप को बहुत बहुत धन्यवाद है।
Second Passenger: Thank you very much

अच्छी आदतें, अच्छी पहचान

अच्छी आदतें (Good Habits)

1. समय का पालन (Punctuality) -
समय पर काम करना और दूसरों के समय का सम्मान करना।
Doing work on time and respecting others' time.

2. ईमानदारी (Honesty) -
हमेशा सच बोलना और ईमानदार रहना।
Always speaking the truth and being honest.

3. नियमित व्यायाम (Regular Exercise) -
शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना।
Taking care of physical and mental health.

4. पढ़ने की आदत (Reading Habit) -
ज्ञान और कौशल को बढ़ाना।
Improving knowledge and skills.

5. सफाई (Cleanliness) -
अपने और आसपास की सफाई रखना।
Keeping yourself and surroundings clean.

6. धैर्य (Patience) -
मुश्किल समय में शांत रहना।
Staying calm in difficult situations.

7. दूसरों की मदद (Helping Others) -
जरूरतमंद लोगों की सहायता करना।
Helping people in need.

8. कृतज्ञता (Gratitude) -
हर चीज़ के लिए आभार व्यक्त करना।
Being thankful for everything.

अच्छी पहचान / व्यक्तित्व

(Good Identity / Personality)

विनम्रता (Politeness)
सभी के साथ सम्मानजनक व्यवहार करना।
Respectful behavior with everyone.

सकारात्मक सोच (Positive Thinking)
हमेशा अच्छा और सकारात्मक सोचना।
Always thinking positively.

जिम्मेदारी (Responsibility)
भरोसेमंद और उत्तरदायी होना।
Being reliable and accountable.

नैतिक मूल्य (Moral Values)
ईमानदारी और अच्छे सिद्धांतों का पालन करना।
Following honesty and good principles.

अच्छा श्रोता (Good Listener)
दूसरों की बात ध्यान से सुनना।
Listening carefully to others.

अच्छी आदतें व्यक्ति को अनुशासित बनाती हैं और अच्छी पहचान मज़बूत चरित्र से बनती है।
Good habits make a person disciplined, and good identity comes from strong character.

कार्यालयों में उपयोगी वाक्य

कृपया इस पर ध्यान दें।
Please pay attention to this.

क्या आप मेरी सहायता कर सकते हैं?
Could you please help me?

मैं अभी इसकी जाँच करता/करती हूँ।
I will check it right away.

कृपया मुझे इसकी जानकारी भेज दें।
Please send me the details.

इस कार्य को आज ही पूरा करना है।
This task needs to be completed today.

क्या हम इस विषय पर चर्चा कर सकते हैं?
Can we discuss this matter?

आपकी बात बिल्कुल सही है।
You are absolutely right.

मैं इस पर विचार करके बताता/बताती हूँ।
I will consider it and let you know.

कविता



गुरुदास गोस्वामी
स्टोर कीपर



नारी दि बॉस

नारी तुम शक्ति अपार हो
युग-युग की तुम धार हो,
कभी पुरुष की छाया बनो
कभी सृष्टि की आधार हो।

नारी तुम 'प्रेम की जननी'
'भाई-बहन' की कहानी,
'दुर्गा' बनकर दुष्ट हरोगी
शक्ति तुम्हारी सबका अनजानी।

नारी तुम कोमल भी हो
कभी हो 'अग्नि' समान,
सरलता में शक्ति छुपी है
तुम खुद हो खुद की पहचान।

नारी तुम युद्ध स्वरूप कभी
कभी है शांति की पहचान,
झुकी हुई गर्दन में भी
छुपा हुआ शक्ति महान।

नारी अपने बल से चलती
पहचान किसी सहारे की नहीं,
मेहनत की जो बूँदें गिरतीं
वो किसी मुकुट से हारी नहीं।

नारी कोई छाया नहीं
नारी ज्वाला, नारी प्रश्न,
सृजन भी है, संहार भी,
जो हर युग में रहे प्रचंड।

नारी चेतना है ज्वालामुखी
मत पहनाओ डर का कफ़न,
नारी सिर्फ ''शरीर'' या वस्तु नहीं
सोया तूफ़ान का प्रलय-वचन।

विश्व का हर आजीविका में
ज़रूरत है ''नारी सशक्तिकरण'',
ऊपर उठकर लैंगिक भेदभाव से
होना चाहिए सामाजिक जागरण।

नारी है 'जीवन की धारा'
जिसकी गर्भ से जन्म सबको मिलता,
उसके बिना सब सुना हमारा
नारी के बिना 'परिवार' कैसे महकता?

जिस गर्भ से जन्म लिया
वो देवी स्वरूप 'मां' है,
संसार का जो रोशनी दिखाए
नारी के आंचल तले 'ब्रह्मांड' है।

कविता



प्रेमनाथ के
कनिष्ठ तकनीकी सहायक

कोचीन शिपयार्ड
भारत की सागरीय शक्ति का गौरव

कोचीन शिपयार्ड, गौरव अपार,
भारत के समुद्री स्वप्न की उड़ान है यह यार।
पाँच दशक से सतत सक्रिय, प्रगति का यह धाम,
समुद्री उत्थान का पर्याय, भारत का अभिमान।

पोत निर्माण हो या मरम्मत का अभियान,
कुशलता इसकी पहचान, बढ़ता देश का मान ।
रक्षा से लेकर वाणिज्य तक, सबका रखता ध्यान,
इंजीनियरिंग की उत्कृष्टता, नवाचार का आधार महान।

आई एस ओ और ग्रीनको के संग, गुणवत्ता का व्रत,
ई एस जी सिद्धांतों के संग , सँवार रहा भविष्य का पथ।
हरित भविष्य की परिकल्पना, स्थायी विकास का संकल्प,
यहाँ निर्मित हर एक जलयान, अब विश्व को है अर्पित।

भारतीय नौसेना की शक्ति का, यह है जीवंत दर्पण,
सी एस एल मेटी से सक्षम नाविक, वैश्विक सेवा में समर्पित।
कोचीन से अंडमान, अंडमान से मुंबई तक, विस्तार है इसका प्रभाव,
उडुपी, हुगली और कोलकाता में भी, दिखता इसका सत्कार।

उत्कृष्टता, नवाचार और समावेशन की, यह एक अनुपम गाथा।
भारत के समुद्री स्वप्नों का, यह ऊँचा उज्ज्वल माथा,
प्रगति का खुला आसमान, कोचीन शिपयार्ड की ये विजय गाथा,
भारत की सागरीय शक्ति का, यह श्रेष्ठतम विकल्प, भारत का अभिमान।

कविता



श्रीजित के आर
कनिष्ठ तकनीकी सहायक

विदाई संदेश

सारांश : पहलगाम आतंकी हमला (वीरगति को प्राप्त हमारे प्रिय भाई और उसके पास असहाय अवस्था में बैठी उसकी सहधर्मिणी... – मृत्यु से पहले के कुछ क्षण

पंचतत्व साक्षी बनकर तेरे मस्तक पर सजाया गया वह तिलक
कुंकुम का रंग कितना सुंदर है कितना शोभायमान है, मेरी सखी

अग्नि के चारों ओर फेरे कन्यादान में थामा गया यह हाथ
दिए गए वचनों की सच्चाई में हम दोनों एक हो जाएंगे
रक्षक बनकर मैं रहूँगा मृत्यु को गले लगाने वाले दिन तक

हरी घास से ढकी पहाड़ी वह सुंदर दृश्यावली
आंस की बूंदे घास की नोकों पर सूर्य किरणों में इंद्रधनुष–सी चमक
सुंदर सपने धीरे – धीरे मेरे मन में घर बना रहे हैं
रंगीन पंख फैलाकर आँगन में उड़ने के लिए
किसलिए पास आया था यह पायल मेरे भीतर बसने को?

रंग क्या है, यह जानने को? धर्म के उत्तर खोजने को?
हम दोनों मनुष्य हैं फिर धर्म क्यों जानना?
हिंसा थामे हाथों से जो सीने में रंग उड़लते हैं न रंग, न धर्म
मनुष्य ही है, यह मानने से पहले हिंसा ढोने वाले धर्मांध आगे बढ़ते चले जाते हैं
मैं अपनी अर्धांगिनी की प्रतीक्षा करता हूँ

आँगन का कवच पहनाकर आँगन में उड़ने की चाह रखने वाली
वह तितली अब पंख टूटकर धरती पर गिर पड़ी उड़ान भरने से पहले ही मैं...
खिलने से पहले झड़ गया हे मेरी सखी, लाल कमल–सा जीवन...
क्यों है यह रुदन, सखी? प्रिये, अपनी आँखे पोंछ लो

हरी घास की चादर अब रक्त से लाल हो गई
तेरे तप्त आँसुओं से क्या घास की नोकें मुरझा गई?
अब अधिक समय नहीं बचा दृष्टि धीरे–धीरे धुंधली हो रही है
इस देह को छोड़ने को मेरी आत्मा व्याकुल है

फिर से मैं दूँगा अपने सत्य वचन तू अकेली नहीं है, सखी...
तेरे दु:ख से भरी यह धरती उत्तर माँगेगी दबी हुई हिंसा से मस्तक से मिटा वह तिलक
फिर से धारण करना, सखी तू नारी है सहनशक्ति सर्वोच्च शक्ति है तू धैर्य के साथ जीना

यदि फिर कोई जन्म हो तो इसी भारत भूमि में जन्म लेना
रक्षक बन जाना सीमाओं की रक्षा के लिए अब और कुछ कह नहीं सकता
मुझे जाने दो प्रिय सखी मेरे हृदय की ये वाणी
अपनी आँखों से स्वर देना

लेख



मेघा मनोहरन
सुजित एन पी की सुपत्नी

मेरे बचपन की अनमोल यादें

बचपन एक ऐसा अनुभव है, जो कभी भी हमारे मन से भुलाया नहीं जा सकता। हमारे जीवन में बचपन एक खूबसूरत क्षण होता है। मेरी भी ज़िंदगी में कुछ ऐसी सुंदर बचपन की यादें हैं, जिन्हें मैं कभी भूल नहीं सकती।

मेरे पिता असम राइफल्स में सैनिक थे, इसलिए मेरा अधिकांश बचपन असम में ही बीता। वहीं मेरा पहला स्कूल था। मेरे मित्र आज भी मेरे दिल में वैसे ही बसे हुए हैं।

स्कूल की बात आते ही मुझे एक और घटना याद आ जाती है। एक बार मेरी माँ मुझे स्कूल के लिए तैयार कर रही थीं, लेकिन मैं उस दिन रो रही थी क्योंकि मुझे स्कूल नहीं जाना था। पिताजी मुझे स्कूल छोड़ने के लिए हम दोनों को साइकिल से ले जा रहे थे। उस दिन मैं इतनी रो रही थी कि ठीक से चल भी नहीं पा रही थी। अचानक मैं सड़क पर गिर गई। पिताजी बहुत घबरा गए क्योंकि मेरे पूरे कपड़े खराब हो गए थे। मैं कीचड़ में गिर गई थी। उस दिन स्कूल जाने की मेरी इच्छा पूरी तरह समाप्त हो गई। जब हम दोनों वापस घर पहुँचे, तो माँ हँसने लगीं। आज भी वह घटना मेरे बचपन की सबसे प्यारी यादों में से एक है।

हम लोग एक बार वहाँ के शिव मंदिर में दर्शन के लिए गए थे। वहां की शिव की मूर्ति इतनी सुंदर और बड़ी थी कि मानो जैसे वह आसमान को छू रहा हो। भगवान के दर्शन के बाद हमें वहाँ प्रसाद भी मिला। उसका स्वाद आज भी मेरे मुँह में बसा हुआ है।

दर्शन की बात आते ही मुझे एक और घटना याद आती है। एक बार पिताजी ने मुझे अपने दफ़्तर लेकर गए । उस दिन पहली बार मैं वहाँ गई थी। पिताजी के सभी मित्रों से मेरे मुलाकात हुई, सब ने मुझे खूब प्यार किया और ढेर सारी मिठाइयाँ भी दीं। वह पल मेरे लिए अत्यंत कीमती था। ऐसी अनेक यादें आज भी मेरे दिल से जुड़ी हुई हैं।

हम सभी के जीवन में बचपन का विशेष स्थान होता है, जिसे हम कभी भूल नहीं सकते। एक लड़की के जीवन में तो बचपन सबसे सुंदर अनुभव होता है, जिसे वह हर पल याद करती है। माँ-बाप का वह प्यार, जो शादी के बाद केवल यादों में रह जाता है, उसे और भी अनमोल बना देता है। काश! वह बचपन मुझे फिर से वापस मिल जाता, काश मैं बड़ी नहीं होती तो शायद मैं फिर से अपने माता-पिता के साथ वही सुनहरे दिन जी पाती।



लेख



बबीता भास्कर
अनीष वी आर की सुपत्नी

मातृत्व का शांत उपचार - प्रसवोत्तर अवसाद का सामना

शिशु का जन्म अक्सर जीवन के सबसे सुखद क्षणों में से एक माना जाता है। लेकिन मातृत्व की शुरुआत केवल खुशी से भरी नहीं होती; यह भावनात्मक रूप से एक गहरा और जटिल परिवर्तन भी है। प्रेम आनंद और आश्चर्य के साथ-साथ, कई महिलाएँ प्रसव के बाद के हफ्तों और महीनों में अत्याधिक थकान, चिंता या अप्रत्याशित उदासी का भी अनुभव करती हैं।

कुछ माताओं में ये भावनाएँ प्रसवोत्तर अवसाद का रूप ले सकती हैं। यह एक ऐसी मानसिक स्वास्थ्य स्थिति है जो बच्चे के जन्म के बाद माँ के भावनात्मक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है। हर माँ में इसके लक्षण एक जैसे नहीं होते, लेकिन इसके कुछ सामान्य संकेत हैं-लगातार उदासी महसूस होना, बार-बार रोना, हर समय अभिभूत या तनावग्रस्त महसूस करना, चिड़चिड़ापन, दैनिक गतिविधियों में रुचि कम हो जाना, तथा शिशु के सो जाने के बाद भी नींद न आना। कुछ माताएँ अपने शिशु से भावनात्मक रूप से जुड़ाव महसूस नहीं कर पातीं या अपराधबोध और आत्म-संदेह जैसी भावनाओं से जूझती हैं।

प्रसवोत्तर अवसाद कई कारणों के संयुक्त प्रभाव से उत्पन्न हो सकता है। प्रसव के बाद शरीर में होने वाले अचानक हार्मोनल बदलाव, शारीरिक थकावट, लगातार नींद का अभाव, मातृत्व के साथ भावनात्मक तालमेल बैठाने की चुनौती तथा पर्याप्त सामाजिक सहयोग का अभाव इसके प्रमुख कारण हो सकते हैं। जिन महिलाओं को पहले से अवसाद या चिंता की समस्या रही हो, उनमें इसका जोखिम अधिक हो सकता है।

समाज अक्सर यह अपेक्षा करता है कि माँ बनने के बाद हर महिला केवल खुश ही महसूस करें। यही कारण है कि कई महिलाएँ अपने अनुभवों और भावनाओं के बारे में खुलकर बात नहीं कर पातीं।

जब शब्दों में अपनी भावनाएँ व्यक्त करना कठिन लगे, तब आर्ट थेरेपी (कला-चिकित्सा) एक वैकल्पिक और सहज माध्यम बन सकती है।

आर्ट थेरेपी के माध्यम से माताएँ बातचीत पर निर्भर रहने के बजाय रंगों, आकृतियों और चित्रों की सहायता से अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकती हैं। इसमें कलात्मक दक्षता महत्वपूर्ण नहीं होती, बल्कि सृजन की प्रक्रिया के माध्यम से स्वयं को समझना और अभिव्यक्त करना होता है। चित्र बनाना, रंग भरना या साधारण कलात्मक सामग्री के साथ काम करना मानसिक तनाव को कम करने, मन को शांत करने और आत्मचिंतन के लिए सुरक्षित स्थान प्रदान कर सकता है।

मातृत्व के शुरुआती महीनों में अधिकांश समय शिशु की देखभाल में बीत जाता है। ऐसे में रचनात्मक गतिविधियाँ माँ को कुछ पल स्वयं के लिए देती हैं-एक ऐसा शांत विराम, जहाँ वह अपनी भावनाओं और अपने भीतर की दुनिया से फिर जुड़ सके।

जब ऐसी रचनात्मक गतिविधियाँ आर्ट थेरेपी समूहों जैसे सहयोगी वातावरण में साझा की जाती हैं, तो अकेलेपन की भावना भी कम होने लगती है। इससे माताएँ यह महसूस करती हैं कि उनके संघर्ष असामान्य नहीं हैं और कई अन्य महिलाएँ भी इसी तरह की भावनाओं से गुजर रही हैं।

प्रसवोत्तर अवसाद से उबरने में समय, संवेदनशीलता और सहयोग की आवश्यकता होती है। विशेषज्ञों की सहायता, परिवार के सहयोग और समझ के साथ-साथ रचनात्मक अभिव्यक्ति भी इस उपचार यात्रा की एक कोमल साथी बन सकती है।

मातृत्व जीवन का एक गहरा परिवर्तन है, और हर यात्रा खुशी से ही शुरू हो-यह आवश्यक नहीं। जब हम ऐसा वातावरण बनाते हैं जहाँ माताएँ बिना किसी डर या संकोच के अपनी कठिनाइयों को व्यक्त कर सकें, तब हम केवल बच्चों की ही नहीं, बल्कि माताओं के मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को भी महत्व देने वाली संस्कृति की ओर एक कदम बढ़ाते हैं।

परिवार और समाज भी इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। बिना किसी निर्णय या आलोचना के उनकी बात सुनना, घर के कामों में सहयोग देना, माँ को पर्याप्त आराम का समय देना और आवश्यकता पड़ने पर पेशेवर सहायता लेने के लिए प्रोत्साहित करना-ये छोटे-छोटे कदम उनके बोझ को काफी हद तक कम कर सकते हैं।

कभी-कभी उपचार की शुरुआत किसी बातचीत से नहीं, बल्कि कागज़ पर धीरे-धीरे फैलते हुए एक रंग से होती है।

कहानी



विष्णुदीप पणिक्कर
वरिष्ठ प्रबंधक

इंसानियत का आईना

आठ सौ बारह वर्षों तक वह वस्तु अंतरिक्ष में भटकती रही, जब तक कि किसी दूसरे संसार की नज़र उस पर नहीं पड़ी।

वह किसी अंतरिक्ष यान के लिए बहुत छोटी थी और उल्कापिंड होने के लिए अत्याधिक व्यवस्थित। उसकी सतह पर उल्कापिंडों की टक्करों और सैकड़ों वर्षों तक अंतरिक्षीय विकिरण के गहरे निशान थे।

यह स्पष्ट था कि उसे किसी ने बनाया था–कहीं, कभी, किसी बुद्धिमान सभ्यता ने।

अंतरिक्ष यान ने उस धातु के कैप्सूल के पास अत्यंत सावधानी से पहुँच बनाई।

''क्या इसके भीतर जीवन का कोई संकेत है?'' कमांडर गफर्ड ने पूछा।

विज्ञान अधिकारी मुस्कराया और बोला,

''आठ सौ वर्ष पुराने अवशेष में जीवन? क्या यह संभव है?'' उन्हें कैसे पता चला कि वह 800 वर्ष पुराना था?

यान में मौजूद वैज्ञानिक ने बताया कि उस कैप्सूल से परावर्तित किरणों में उसकी आयु से संबंधित जानकारी निहित थी। कमांडर ने कहा, ''फिर से जाँच करो।''

अगले ही पल उनकी हँसी गायब हो गई।

नियंत्रण कक्ष में गहरा सन्नाटा छा गया।

ङ्क'इसके अंदर कुछ है।''

ये शब्द हवा में जैसे ठहर गए। वह ''कोई व्यक्ति'' नहीं, बल्कि ''कुछ'' था। यह सुनकर खोजी दल के सदस्य एक-दूसरे की ओर आशंकित नज़रों से देखने लगे। प्राचीन कैप्सूल को सावधानीपूर्वक यान के सुरक्षित नियंत्रण कक्ष में लाया गया। उसे भीतर खींचने के लिए आयन आकर्षक सक्रिय कर दिए गए।

उस यान का निर्माण अत्यंत आदिम स्तर का था, और यही बात उन्हें सबसे अधिक उलझन में डाल रही थी। उसकी प्रणाली पूरी तरह कच्ची रासायनिक प्रणोदन तकनीक पर आधारित थी। उनकी दृष्टि में यह अत्यंत खराब डिज़ाइन था। इतना ही नहीं, उसमें साधारण धातुकर्म का उपयोग किया गया था और विकिरण से सुरक्षा की मात्रा में इतनी गंभीर और विशाल त्रुटियाँ थीं कि वे आश्चर्यचकित होने के बजाय अधिक क्रोधित हो गए।

उस यान में केवल बहुत ही कम समय तक जीवित रहने लायक व्यवस्थाएँ थीं। ऐसा प्रतीत होता था मानो वह अंतरिक्ष की ओर जाने वाला एकतरफ़ा सफ़र हो। उनके लिए इसका केवल एक ही अर्थ निकलता था–या तो इस तकनीक को बनाने वाले जीवों की जैविक संरचना उनकी समझ से कहीं अधिक उन्नत और विचित्र थी, जिससे उन्हें ऐसी सीमित जीवन-समर्थन व्यवस्था की आवश्यकता नहीं पड़ती थी। लेकिन तभी उन्हें एक ऐसी चीज़ मिली जिसने उनके अभियंताओं को पूरी तरह स्तब्ध कर दिया और उनके नैतिक विशेषज्ञों को भय और चिंता से भर दिया।

जिस किसी ने भी इस यान का निर्माण किया था, उसने उसके यात्री को जीवित बचने की लगभग कोई वास्तविक संभावना दिए बिना अंतरिक्ष में भेज दिया था। यह एक बलिदान था।

क्या यह किसी धार्मिक आस्था के कारण किया गया था? वे अभी तक यह नहीं जान पाए थे।

चौथे दिन उन्होंने अंततः उस कैप्सूल को खोल दिया।

अंदर उन्हें हड्डियों का एक कंकाल मिला। उन्हें कैप्सूल के वातावरण में ऑक्सीजन और कार्बन डाइऑक्साइड के अणुओं के अवशेष भी मिले। इससे उन्होंने कुछ और अनुमान लगाने शुरू किए। क्या यह जीव ऑक्सीजन छोड़ता था या कार्बन डाइऑक्साइड? इस प्रश्न का उत्तर केवल आगे के शोध से ही मिल सकता था। तभी वे कोई उचित अनुमान लगा सकते थे। जल्द ही खोजकर्ताओं को यह एहसास हुआ कि ये हड्डियाँ किसी चार पैरों वाले जीव की थीं, न कि उस यान के पायलट की, जैसा कि सामान्यतः अपेक्षा की जाती। वे किसी वैज्ञानिक के अवशेष भी नहीं थे। वह तो एक बेबस जानवर था।

कमरे में गहरा सन्नाटा छा गया। अनुवादक उस यान के अभिलेखों से प्राप्त बिखरे हुए आँकड़ों को समझने में जुट गए। वे संकेत एक भूले-बिसरे संसार से आ रहे थे, जो एक साधारण पीले तारे की परिक्रमा करता था।

सबसे पहले एक नाम दिखाई दिया- लाइका । फिर उसकी प्रजाति का वर्गीकरण सामने आया ।

कुत्ता ।

फिर लॉन्च की तारीख सामने आई। उसके बाद मिशन का पूरा विवरण दिखाई दिया।

यह सारी जानकारी उनकी स्क्रीन पर बिखर गई। कमरे में छाया सन्नाटा और भी गहरा हो गया। ऐसा लगा मानो वह उनके 0.5 ग्राम वाले अंतरिक्ष वातावरण में भी भारी होकर नीचे उतरने लगा हो। इन खोजकर्ताओं ने इससे पहले भी अनेक विलुप्त सभ्यताओं के अवशेष खोजे थे। उन्होंने युद्धों, महामारियों और भीषण अत्याचारों के प्रमाण भी देखे थे। लेकिन यह घटना उनसे बिल्कुल अलग महसूस हो रही थी।

रिकॉर्डों से पता चला कि उस जानवर को अपने प्रशिक्षकों पर पूरा भरोसा था। वह स्वेच्छा से उस कैप्सूल के अंदर चला गया था।

इसलिए नहीं कि वह उस मिशन को समझता था।

बल्कि इसलिए कि उसे उन हाथों पर पूरा भरोसा था, जिन्होंने उसे वहाँ तक पहुँचाया था।

कमांडर गफर्ड अनुवादित रिपोर्ट को टकटकी लगाकर देखते रहे।

''क्या यह मनुष्यों के साथ रहने वाली पालतू साथी प्रजाति थी?''

''हाँ।''

''और उन्होंने उसे मरने के लिए भेज दिया?''

विज्ञान अधिकारी ने गहरी साँस ली और कठिनाई से अपनी बात कही।

''हाँ।''

कुछ क्षणों तक कोई भी कुछ नहीं बोला। आख़िरकार कमांडर गफर्ड ने काँच के पार उस छोटे-से कंकाल की ओर देखा, जो अब भी उस कैप्सूल के भीतर शांत पड़ा था। वह कैप्सूल अब उस जीव की अंतिम समाधि बन चुका था।

अकेला।

वह तारों के बीच फैले ठंडे, असीम अंतरिक्ष में निरंतर भटकती रही। वह एक ऐसी सभ्यता की बलि बन गई थी, जिसने स्वर्ग तक पहुँचने की अपनी आकांक्षा में अपने सबसे वफ़ादार साथी को ही बलिवेदी पर चढ़ा दिया था।

''उसे वापस ले आओ,'' गफर्ड ने कहा।

कमरे में मौजूद सभी लोगों की नज़रें उनकी ओर मुड़ गईं।

उन्होंने स्क्रीन पर लिखे उस नाम को ध्यान से देखा।

लाइका।

''उसे... ज़िंदा वापस ले आओ।''

उसके अवशेषों से प्राप्त जैविक सामग्री की सहायता से लाइका को पुनर्जीवित किया गया।

आठ सौ वर्षों में पहली बार, वह अब अकेली नहीं थी। लाइका ने धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलीं।

सबसे पहले उसने गरमाहट महसूस की। दूसरी अनुभूति एक हाथ की थी। वह मानव का हाथ नहीं था। उसमें बहुत अधिक उँगलियाँ थीं, जो उसके मुलायम, रोएँदार शरीर पर प्यार से फिर रही थीं।

शुरुआत में लाइका घबरा गई। उसकी सहज प्रवृत्ति ने उस एलियन को खतरे के रूप में महसूस किया, और वह ''लड़ो या भागो'' की स्वाभाविक प्रतिक्रिया में चली गई। लेकिन जब उस एलियन का कोमल स्पर्श दोबारा हुआ और उसने उसे यह भरोसा दिलाया कि उनका इरादा नुकसान पहुँचाने का नहीं है, तो लाइका तुरंत पलटकर अपनी पेट उनकी उँगलियों के सामने कर दी, ताकि वे उसे सहला सकें।

लाइका लगातार अपनी पूँछ हिलाती रही। कमरे में मौजूद सभी लोग यह देखकर खिलखिलाकर हँस पड़े।



कमरे में मौजूद कुछ लोगों के मन में आक्रोश और रोष भी उमड़ पड़ा। वे सोच रहे थे-

आख़िर कौन ऐसा हो सकता है जो उसे अंतरिक्ष की एकतरफ़ा यात्रा पर, लगभग निश्चित मृत्यु की ओर, भेज दे?

कई महीनों तक उन्होंने लाइका का अध्ययन किया। उन्होंने उसे अपनी भाषा भी सिखाई।

हालाँकि वह उसे पूरी तरह नहीं सीख पाई। आख़िरकार, उसका मन तो अब भी एक दूसरी दुनिया के कुत्ते का ही था। वह शब्दों से अधिक भावनाओं को समझती थी, और तर्कों से अधिक इरादों को पहचानती थी।

लेकिन अंत वे लाइका से संवाद करने में सफल हो गए।

और सबसे पहला प्रश्न उन्होंने वही पूछा, जो कैप्सूल खोलने के बाद से उन्हें लगातार परेशान कर रहा था।

''क्या तुम्हें इंसानों की याद है?''

लाइका की पूँछ ज़ोर-ज़ोर से फ़र्श पर थपथपाने लगी।

''हाँ।'' उसके लिए वह सब कुछ मानो कल की ही बात थी। आख़िर मृत्यु तो एक लंबी नींद की तरह ही होती है।

उन्होंने अगला प्रश्न पूछा-

''क्या वे तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार करते थे?''

''ज़्यादातर,'' लाइका ने अपनी पूँछ हिलाते हुए उत्तर दिया।

'ज़्यादातर?''

लाइका ने अपना सिर थोड़ा तिरछा कर लिया।

''कुछ लोग उदास थे। मुझे नहीं पता क्यों...'' उसने फिर सिर तिरछा किया और हल्की-सी करुण आवाज़ निकाली।

शोधकर्ताओं ने एक-दूसरे की ओर देखा।

उदास?

क्रूर नहीं।

घृणा से भरे हुए नहीं।

बल्कि... उदास?

यह उत्तर उन्हें आने वाले कई दिनों तक बेचैन करता रहा।

जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए, लाइका पूरे आकाशगंगीय संघ में प्रसिद्ध हो गई। अरबों प्राणियों के लिए वह एक युवा सभ्यता द्वारा किए गए सबसे बड़े नैतिक अपराध का प्रतीक बन गई। पूरे-पूरे विद्यालयों में उसकी कहानी पढ़ाई जाने लगी। राजनेता उसके उदाहरण का उल्लेख करते हुए कहते थे कि यदि तकनीकी प्रगति के साथ करुणा न हो, तो वह अत्यंत खतरनाक हो सकती है।

और अंततः दबाव इतना बढ़ गया कि उसे नज़रअंदाज़ करना असंभव हो गया।

एक न्यायाधिकरण गठित किया गया।

संघ ने पृथ्वी की यात्रा करने का निर्णय लिया।

मानवता को अपने किए का जवाब देना होगा। और लाइका स्वयं उस न्याय की साक्षी बनेगी।

एक उजली गर्मियों की सुबह, आकाशगंगीय संघ का विशाल बेड़ा पृथ्वी के ऊपर आ पहुँचा।

यह पृथ्वी उस धातु के कैप्सूल में सुरक्षित रिकॉर्डों में वर्णित पृथ्वी जैसी बिल्कुल नहीं थी।

महासागरों के ऊपर तैरते हुए शहर दिखाई दे रहे थे। जिन क्षेत्रों से कभी जंगल पूरी तरह नष्ट हो गए थे, वहाँ अब फिर से घने वन लहलहा रहे थे। पृथ्वी का वायुमंडल भी सदियों पहले की तुलना में कहीं अधिक स्वच्छ और स्वस्थ दिखाई दे रहा था।

उनका मुख्य अंतरिक्ष यान ऐसे ही एक तैरते हुए शहर पर उतर गया। लाखों लोग यह दृश्य देख रहे थे।

कमांडर गफर्ड उनके सामने खड़े थे।

उन्होंने कहा, ''कई वर्षों से हमने तुम्हारे एक पीड़ित की स्मृति को सुरक्षित रखा है।''

भीड़ में हलचल और फुसफुसाहट फैल गई।

कोई समझ नहीं पा रहा था कि उनका क्या मतलब है। तभी अंतरिक्ष यान का द्वार खुला।

और उसमें से एक छोटी-सी कुतिया बाहर आई। एक पल के लिए ऐसा लगा मानो पूरी पृथ्वी की साँसें थम गई हों।

लोग स्तब्ध होकर उसे देखने लगे।

इतिहासकारों के हाथों से उनके नोट्स गिर पड़े। असंभव संभव हो चुका था। लोगों को अपनी सोच समेटने और अनगिनत डिजिटल अभिलेखों में खोजकर यह पहचानने में कुछ समय लगा कि यह वास्तव में लाइका थी।

इस पहचान की प्रक्रिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने उनकी सहायता की।

और अब लाइका वापस लौट आई थी।

तभी एक छोटी-सी बच्ची सुरक्षा कर्मियों के रोकने से पहले ही भीड़ की बैरिकेड पार करके आगे दौड़ पड़ी। वह सीधे लाइका की ओर भागी।

सभी ने साँस रोक ली।

लाइका ने उसकी ओर देखा। फिर उसकी पूँछ खुशी से हिलने लगी। बच्ची उसके सामने घुटनों के बल बैठ गई।

और अगले ही क्षण लाइका उछलकर उसकी बाँहों में समा गई।

भीड़ खुशी और भावनाओं से फूट पड़ी।

कुछ लोग हँस रहे थे। बहुत-से लोग रो रहे थे।

और कुछ लोग तो स्तब्ध होकर वहीं खड़े रह गए।

उधर न्यायाधिकरण के सदस्य उलझन में पड़ गए। यह तो वैसा बिल्कुल नहीं था, जैसा उन्होंने सोचा था।

उन्हें लगा था कि पीड़िता अपने अत्याचारियों को पहचान लेगी।

उन्हें उम्मीद थी कि वह उनसे दूर हट जाएगी।

उनसे डरेगी।

उनके अपराधों को सबके सामने उजागर करेगी।

लेकिन इसके बजाय... वह एक छोटी बच्ची के चेहरे को प्यार से चाट रही थी।

अगले कई दिनों तक सुनवाई चलती रही।

एलियनों ने अपने सभी प्रमाण प्रस्तुत किए। लॉन्च का विवरण। उस अमानवीय और तंग कैप्सूल में कैद रखा जाना। मृत्यु का लगभग निश्चित होना। और सभी नैतिक उल्लंघनों का विवरण। उनका मामला इतना मज़बूत था कि उसमें कोई कमी नहीं थी।

लेकिन मानव इतिहासकारों ने कोई बहस या इनकार नहीं किया। उन्होंने हर बात स्वीकार कर ली।

एक इतिहासकार ने कहा, ''हाँ, यह गलत था।''

तभी न्यायाधिकरण के एक सदस्य ने कठोर स्वर में पूछा, ''तो फिर तुमने ऐसा किया ही क्यों?''

इतिहासकार कुछ क्षण चुप रहा।

फिर उसने उत्तर दिया, ''क्योंकि हममें से एक हिस्सा सितारों तक पहुँचने का सपना देख रहा था।''

यह उत्तर सुनकर न्यायाधिकरण के सदस्य क्रोध से भर उठे।

उन्होंने कहा, ''तो क्या अपनी महत्वाकांक्षा के लिए तुमने एक जीवन की बलि दे दी?''

इतिहासकार ने शांत स्वर में उत्तर दिया,

''हाँ।''

न्यायाधिकरण ने फिर पूछा, ''तो फिर तुम अपने इस कार्य का बचाव कैसे कर सकते हो?''

''हम अपना बचाव नहीं करेंगे।''

यह सुनकर न्यायाधिकरण के सदस्य एक-दूसरे की ओर देखने लगे।

उन्होंने तो इनकार की उम्मीद की थी।

या फिर बहानों की।

आख़िर बहाने बनाना तो लगभग पूरे ब्रह्मांड की अधिकांश बुद्धिमान प्रजातियों में पाया जाने वाला स्वाभाविक व्यवहार था। यह उनके विकासक्रम से बचा हुआ एक गुण था, जो कठिन परिस्थितियों में स्वयं को बचाने के लिए विकसित हुआ था।

लेकिन इसके विपरीत, मानवता ने बिना किसी बहाने के शांतिपूर्वक निर्णय स्वीकार कर लिया। यह देखकर न्यायाधिकरण पूरी तरह हैरान रह गया।

अंतिम सुनवाई का केंद्र लाइका थी।

कमांडर गफर्ड सावधानी से उसके पास आए।

उन्होंने पूछा, ''क्या तुम्हें पता है कि हम तुम्हें यहाँ क्यों लाए हैं?''

लाइका ने अपनी पूँछ हिलाई।

''नहीं।''

''हम तुम्हें न्याय दिलाने के लिए यहाँ लाए हैं।''

''न्याय?''

''हाँ, ताकि मानवता को उसके किए के लिए उत्तरदायी ठहराया जा सके।''

लाइका ने पूरे कमरे में चारों ओर नज़र दौड़ाई।

वहाँ मौजूद सभी मनुष्य घबराए हुए दिखाई दे रहे थे।

वह वही भाव था, जो लाइका को अपने लॉन्च से पहले याद था।

वही भाव उन हाथों पर था, जिन्होंने आख़िरी बार प्यार से उसके मुलायम बालों को सहलाया था।

कमांडर गफर्ड उसके सामने घुटनों के बल बैठ गए।

उन्होंने धीरे से कहा, ''उन्होंने तुम्हारे साथ विश्वासघात किया।''

लाइका कुछ क्षण सोचती रही।

शायद किया होगा।

उसे वास्तव में पता नहीं था। कुत्ते दुनिया को विश्वासघात और न्याय के फैसलों में नहीं बाँटते।

वे दुनिया को चेहरों, आवाज़ों, गंधों और यादगार पलों के माध्यम से समझते हैं।

कमांडर ने आगे कहा,

''उन्होंने तुम्हें मरने के लिए भेजा था, लाइका।''

लाइका ने उनकी ओर देखा।

''कुछ लोगों ने।''

पूरा कमरा एकदम शांत हो गया।

फिर कमांडर ने पूछा, ''तो फिर तुम आज भी उनसे प्रेम क्यों करती हो?''

लाइका ने दर्शकों की ओर नज़र डाली। एक छोटा-सा लड़का उसे देखकर मुस्कुरा रहा था।

एक बुज़ुर्ग महिला की आँखों से आँसू बह रहे थे। एक वैज्ञानिक उसे उसी अपराधबोध के साथ देख रहा था, जिसे लाइका बहुत पहले महसूस कर चुकी थी।

फिर लाइका ने उत्तर दिया-

''क्योंकि उनमें से बहुत-से लोग मुझसे प्यार करते थे।''

कमांडर ने भौंहें सिकोड़ते हुए कहा,

''लेकिन इससे जो हुआ, वह मिट तो नहीं जाता।''

लाइका ने शांत स्वर में उत्तर दिया,

''नहीं।''

कमांडर ने फिर पूछा, ''तो फिर तुमने उन्हें माफ़ क्यों कर दिया?''

लाइका ने अपना सिर थोड़ा तिरछा किया। यह प्रश्न उसे कुछ अजीब लगा। 'माफ़ करना' तो तब होता है, जब मन में पहले से क्रोध या कटुता हो। लेकिन उसके मन में ऐसा कुछ था ही नहीं। उसके पास छोड़ने के लिए कोई गुस्सा नहीं था। त्यागने के लिए कोई द्वेष नहीं था।

केवल स्नेह था-जो स्मृतियों से भी अधिक समय तक जीवित रहा। आख़िरकार उसने वही उत्तर दिया, जो वह सचमुच जानती थी-

''वे हमेशा मेरा परिवार हैं।''

इतना कहकर लाइका मंच से उतर गई। वह कमरे के एक कोने में बैठे रोते हुए एक छोटे लड़के के पास गई। धीरे से उसके पास गोल होकर लेट गई और उसकी गोद में सिर रखकर सो गई।

पूरा सभागार यह दृश्य देखता रह गया।



कोई भी कुछ नहीं बोला।

कुछ लोग रो पड़े। लेकिन वह राहत के आँसू नहीं थे। वे दुःख, पश्चाताप और अपराधबोध के आँसू थे। अब मानवता का नैतिक विवेक पूरी तरह सहानुभूति की ओर झुक चुका था। अब कुछ लोगों की गलती को भी पूरी मानवता एक अक्षम्य अपराध मानती थी।

और कैप्सूल मिलने के बाद पहली बार कमांडर गफर्ड के मन में संदेह पैदा हुआ।

सदियों से उन्होंने जो एक सीधी-सादी नैतिक कहानी अपने मन में बना रखी थी, वह धीरे-धीरे टूटने लगी।

मानवता दोषी थी।

यह बात अब भी सत्य थी।

लेकिन केवल यही पूरी सच्चाई नहीं थी।

जिस प्रजाति ने लाइका को अंतरिक्ष में भेजा था, वही प्रजाति- लावारिस जानवरों के लिए आश्रय-स्थल भी बनाती थी। अपने पालतू जानवरों के मर जाने पर शोक मनाती थी। उनकी कब्रों पर रोती थी। और घायल कुत्तों को बचाने के लिए व्यस्त राजमार्ग पार करके उन्हें सुरक्षित स्थान तक पहुँचाती थी।

एक ही सभ्यता में ये दोनों रूप मौजूद थे।

और किसी तरह, एक कुतिया यह बात उन अत्यंत बुद्धिमान प्राणियों से भी बेहतर समझ गई।

न्यायाधिकरण की कार्यवाही बिना किसी निर्णय के समाप्त हो गई।

न कोई दंड दिया गया। न किसी प्रकार का हर्जाना माँगा गया। न कोई औपचारिक घोषणा की गई।

आकाशगंगीय संघ बस वापस चली गई।

इसलिए नहीं कि मानवता निर्दोष थी।

वे दुनिया को केवल दो हिस्सों-दोषी या निर्दोष, अच्छा या बुरा-में बाँटना चाहते थे। लेकिन उन्हें ऐसा नहीं मिला। जहाँ वे केवल दो स्पष्ट विकल्पों (बाइनरी) की उम्मीद कर रहे थे, वहाँ उन्हें विरोधाभास, विविधता और जटिलता मिली।

और आठ सौ वर्षों में पहली बार, लाइका सचमुच अपने घर लौट आई। अपने ही परिवार के पास।

कहानी



नताशा एलिस शारोन
जूली वर्गीस की सुपुत्री

जादुई पेंसिल





एक बार की बात है, केट नाम की एक लड़की थी जो एक छोटे से गाँव में रहती थी। उसका जन्मदिन आने वाला था, और उसके माता-पिता ने उसे एक जादुई पेंसिल उपहार में दी। उस पेंसिल से केट जो भी चित्र बनाती, वह सचमुच जीवित हो जाता था।

शुरुआत में केट ने उस पेंसिल का बहुत समझदारी से उपयोग किया। वह ऐसी चीज़ें बनाती जो गाँव के लोगों के काम आतीं और उनकी मदद करतीं। उसकी दयालुता से सभी बहुत खुश थे।

लेकिन धीरे-धीरे केट लालची हो गई। उसने सिर्फ अपने लिए चीज़ें बनानी शुरू कर दीं और, और भी अधिक पाने की इच्छा करने लगी। यह देखकर उसके माता-पिता ने उसे एक सबक सिखाने का निश्चय किया। एक रात, जब केट सो रही थी, तो उन्होंने चुपचाप जादुई पेंसिल की जगह एक साधारण पेंसिल रख दी।

अगली सुबह केट ने चित्र बनाने की कोशिश की, लेकिन कुछ भी नहीं हुआ। वह उदास हो गई और उसे एहसास हुआ कि वह कितनी लालची हो गई थी। तभी अचानक ज़ोर से अलार्म बजने लगा। केट घबराकर बिस्तर से उठी और समझ गई कि यह सब एक सपना था-और उसे स्कूल के लिए देरी हो रही थी!

उस दिन के बाद केट ने खुद से वादा किया कि वह हमेशा दयालु और कृतज्ञ रहेगी।

सीख : लालच हमें जीवन की सच्ची बातों से दूर कर देता है; दयालुता और कृतज्ञता ही सच्चा सुख लाती हैं।

महिला दिवस समारोह









sequenceindia.com